कन्या-शिक्षा-दर्पण

पढ़न के गुण की शुभ सारियाँ।
सुरभिता करके कुल - क्यारियाँ ॥
गृहकला - निपुणा पति - प्यारियाँ।
पलट दें युग आर्य - कुमारियाँ ॥

'वीरेन्द्र' साहित्यरत्न

लेखिका—
श्रीमती पार्वती देवी

प्रकाशक—
एस. बी. सिंह,
काशी-पुस्तक-भण्डार,
चौक, बनारस।

छठवीं संस्करण २००० सन् १९५२ [मूल्य एक रुपया

प्रकाशक—
एम० पी० सिंह
काशी-पुस्तक-भण्डार,
चौक, बनारस

मुद्रक—
मेवालाल
बम्बई प्रिंटिंग

समर्पण

★

भारत की उन

कुमारियों

के

कर-कमलों में

★

जिन पर

देश का भविष्य

निर्भर है।

—लेखिका

भूमिका

हिन्दी में ऐसी पुस्तकों का अभाव-सा है, जो कुमारी के हाथ में देने योग्य हो और जिनसे उन्हें बहुत-सी बातों की शिक्षा मिल सके। इसी कमी की पूर्ति के लिये मैंने यह पु लिखी है। यह पुस्तक निःसंकोच होकर कन्याओं के हाथ में दी सकती है और वे इससे यथेष्ट लाभ उठा सकती हैं। पुस्तक कैसी यह बात पुस्तक की विषय-सूची ही बतला देगी।

शिवरात्रि, १९९१ वि०

लेखिका—
पार्वती देवी

विषय-सूची

के लिए माता नहीं बैठी रहेगी । वहाँ तो सब लोग तुम्हारे गु[णों का] बखान करेंगे और अपने अच्छे-अच्छे गुण तुम तभी दिखला सकोगी जब तन्दुरुस्त रहोगी । रोगी रहने पर तुम कुछ भी न कर सको[गी।] न तो तुम अच्छा भोजन ही बना सकोगी, न सास ससुर की सेवा ही कर सकोगी और न गृहस्थी का कोई और ही का[म कर] सकोगी । यदि कोई काम करोगी भी तो उसमें तुम्हारा दि[ल न] लगेगा—बेगार सी टाल दोगी । किन्तु काम वही अच्छा होता है, वही लोगों को पसन्द आता है, जो जी लगाकर किया जाता है।

इसलिए प्रत्येक कन्या का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने [जीवन] को सुखी बनाने के लिए बचपन से ही अपनी तन्दुरुस्ती पर [ध्यान] रक्खे । क्योंकि तन्दुरुस्ती तभी अच्छी रहेगी, जब लड़कों बचप[न से] ही नियम का पालन करना सीखेगी और अच्छे कामों की [आदत] डालेगी । इसीसे इस पुस्तक में वे सारी बातें लिखी गयी हैं जो कन्[याओं] के लिए बहुत ही लाभदायक और आवश्यक हैं ।

दिन-चर्या

प्रातहिं उठिके नित्य नित, करिये प्रभु को ध्यान।
यातें जग में होइ सुख, अरु उपजै सतज्ञान॥

प्यारी बेटियो ! अब इस प्रकरण में तुम्हें यह बतलाया [जाता है] कि दिन और रात का समय तुम्हें किस तरह बिताना चाहिये। [इस]लिए इसे तुम ध्यान से पढ़ो और इसके अनुसार काम कर डालो ।

तड़के उठना

सूर्य उदय होने से पहले उठ जाया करो। उठते ही हाथ जोड़ ईश्वर की स्तुति करो। यहाँ पर एक प्रार्थना लड़कियों के लिये भी दी जाती है—

प्रार्थना

"दयामय, दीनबन्धु भगवान,
जगत के नायक, न्याय-निधान!
देख लो अब भारत की ओर,
मिटा दो सारे संकट घोर ॥१॥
विविध मत-माया का हो अन्त,
ज्ञान, गुण, गौरव, बढ़े अनन्त।
मिले सर्वत्र हमें सम्मान,
न कायरपन का रहे निशान ॥२॥
वीर, विदुषी, बालक, विद्वान,
धनी, निर्धन सब एक समान।
हृदय में रक्खें अमित उमंग,
परस्पर मिलें प्रेम के संग ॥३॥
शिल्प, वाणिज्य बढ़े उद्योग,
रुचे सबको, हो सुलभ सुयोग।
न भूखे रोवें दीन किसान,
न मद में अन्धे हों धनवान ॥४॥
विवेकी विज्ञ विचार-प्रचार,
करें हों नूतन आविष्कार।
न कोई शेष रहे प्रतिबन्ध,
करें सब अपने आप प्रबन्ध ॥५॥

खेल कूद या कसरत ।

जब तक तुम्हारी अवस्था खेलने-कूदने की हो, तब तक ... समय एक घण्टा अवश्य खेलो । इससे खासी कसरत हो जाती ... शरीर में ताकत आती है हाजमा ठीक रहता और चित्त प्रसन्न ... है । किन्तु जब तुम्हारी अवस्था खेलने के योग्य न रहे और ... माता पिता तुम्हें खेलने-कूदने से मना करें, तब तुम खेलना-कू... छोड़ कसरत करना शुरू कर दो । तुम्हारे लिए कौन सी कसरत ... दायक है, यह आगे चलकर बताया जायगा ।

सोने का समय

रात को आठ बजे भोजन कर लो । यदि तुम्हारी इच्छा ... इससे पहले भी भोजन कर सकती हो । पर जिस समय भोजन ... उसी समय प्रति दिन भोजन किया करो । यह नहीं कि कभी ... बजे शाम को भोजन कर लिया और कभी नौ बजे । ऐसा क... तन्दुरुस्ती खराब हो जाती है ।

भोजन करने के बाद दस-पन्द्रह मिनट तक टहलो औ... सो जाओ ।

घरवालों के साथ बर्ताव ।

मातु पिता-गुरु-स्वामी-सिख, सिर धरि करहिं सुभाय
... लाभ तिन्ह जनम कर, न तरु जनम जग जाय ।

...।, चाचा-चाची बहन-भाई आदि की आज्ञाओं का ... करना चाहिये । जो लड़की इनकी आज्ञाओं का पालन

ग्नी, उसकी सब लोग निन्दा करते हैं आज्ञा न माननेवाली लड़की
ाुद भी सुखी नहीं रहती। क्योंकि ऐसी लड़की पर माता-पिता नाराज
हते हैं और बात-बात पर उसे डाँट-फटकार बतलाते है, इससे लड़की
हुत दुखी रहा करती हैं। किन्तु जो लड़की अपने बड़ों की आज्ञा
ानती हैं, उस पर सब लोग प्रसन्न रहते हैं। यदि उस लड़की से कभी
ोई गलती भी हो जाती है तो लोग उस पर बिगड़ते नहीं, बल्कि कोमल
ब्दों में उसे उसकी गलती समझा देते हैं। इससे आज्ञा माननेवाली
ड़कियाँ हमेशा खुशदिल रहा करती हैं। प्रत्येक लड़की को यह बात
ाद कर लेनी चाहिये कि—

'यदि तुम खुश रहना चाहो तो दूसरों को खुश रखो।"

जो लड़की दूसरों को खुश रखती है, वह स्वयं भी खुश रहती है।
ड़की दूसरों को खुश नहीं रखती, वह खुद भी खुश नहीं रहती।
यह याद रहे कि माता-पिता की सेवा करना तुम्हारा परम कर्तव्य
क्योंकि पुत्र तो अपने माता-पिता की सेवा जिन्दगी भर करता हैं,
ुम्हें उतना समय नहीं मिल सकता। जब तुम अपने घर चली
ागी, तब माता-पिता की सेवा कैसे कर सकोगी? फिर तो माता-
का ऋण तुम्हारे सिर पर लदा रह जायगा। जिसने तुम्हें पाल-
कर सयानी किया, पढ़ाया-लिखाया, तुम्हारा मल-मूत्र फेंका,
प्रति तुम्हारा क्या कर्तव्य है, इसे तुम अपनी बुद्धि से ही सोच
ी हो।

वे लड़कियाँ अपराधिनी हैं, जो माता-पिता की सेवा नहीं करतीं
उनकी आज्ञा का पालन नहीं करतीं। माता का ऋण तो संसार में
भी बड़ा है। एक बार श्रवण ने हँसकर अपनी माता से पूछा—
! मैंने तुम्हारी इतनी सेवा की, पर यह स्थिर नहीं कर सका कि
ं मैं तुम्हारा ऋण चुका सका या नहीं?"

माता ने उत्तर दिया—"बेटा! इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम

अपने मुँह से किसी को गाली न दो। यदि कोई लड़की तुम्हें गाली तो उसे सहन कर जाओ। यदि उसको गाली के बदले तुम भी उसे ी दोगी तो तुम्हें भी लोग बुरी लड़की कहेंगे। किसी से झगड़ा न ।। सबसे मिलकर रहो। किसी को कोई ऐसी बात न कहो, जो बुरी लगे।

बुरी संगति का क्या प्रभाव पड़ता है, इसे कैकेयी के उदाहरण में लो। रानी कैकेयी ने दासी मन्थरा को अपनी सखी बनायी थी। थरा बहुत दुष्ट स्वभाव की थी। उसने धीरे-धीरे कैकेयी को ऐसा गाड़ दिया कि उसने राम जैसे तेजस्वी पुत्र को वन भेजवाया। का फल यह हुआ कि रामचन्द्र के शोक में उसके पति महाराज रथ का शरीरान्त हो गया, जिससे वह विधवा हो गयी और उसकी भी आशा सफल नहीं हुई। हमेशा के लिए उसका नाम कलंकित गया। आज भी लोग कैकेयी की कहानी पर थूकते हैं। यह बुरी गति का ही असर है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है:—

हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहु वेद विदित सब काहू॥
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परसि कुधातु सुहाई॥
गगन चढ़ै रज मेरु प्रसंगा। कीचहु मिलै नीच जल संगा॥
धूमहु तजै सहज करुआई। अगर प्रसंग सुगन्ध बसाई॥
मदिरा गंग तरंग मिलि, गंगाजल ह्वै जाय।
गंगाजल मदिरा मिले, वारुणि नाम धराय॥

इसका भावार्थ यह है कि लोक और वेद में यह प्रसिद्ध बात है कुसंग से हानि और सुसंग से लाभ होता है। अच्छी संगति में ष्ट लोग भी उसी तरह सुधर जाते हैं, जैसे पारस को छूकर लोहा भी ोना हो जाता है। हवा के साथ से जमीन पर पड़ी रहनेवाली धूल ाकाश पर चढ़ जाती है, वही धूल जल का साथ पाने पर कीचड़ । जाती है। संगति के प्रभाव से धुआँ भी अपनी स्वाभाविक कड़ुआ-

...कूद या कसरत ।

...स्था खेलने-कूदने की हो, तब तक फुरसत के ...खेलो । इससे खासी कसरत हो जाती है, ...हाजमा ठीक रहता और चित्त प्रसन्न रहता ...अवस्था खेलने के योग्य न रहे और तुम्हारे ...कूदने से मना करें, तब तुम खेलना-कूदना ...द कर दो । तुम्हारे लिए कौन सी कसरत लाभ- ...लकर वताया जायगा ।

सोने का समय

...जे भोजन कर लो । यदि तुम्हारी इच्छा हो ...जन कर सकती हो । पर जिस समय भोजन व ...न भोजन किया करो । यह नहीं कि कभी तो ...न कर लिया और कभी नौ वजे । ऐसा करने ...ो जाती है ।

...के वाद दस-पन्द्रह मिनट तक टहलो और

घरवालों के साथ वर्ताव ।

...ा-गुरु-स्वामी-सिख, सिर धरि करहिं सुभाय ।
...य तिन्ह जनम कर, न तरु जनम जग जाय ॥

...ा, चाचा-चाची वहन-भाई आदि की आज्ञाओं का हमेशा ...लिये । जो लड़की इनकी आज्ञाओं का पालन न...

करती, उसकी सब लोग निन्दा करते हैं आज्ञा न माननेवाली लड़की खुद भी सुखी नहीं रहती। क्योंकि ऐसी लड़की पर माता-पिता नाराज रहते हैं और बात-बात पर उसे डाँट-फटकार बतलाते हैं, इससे लड़की बहुत दुखी रहा करती है। किन्तु जो लड़की अपने बड़ों की आज्ञा मानती है, उस पर सब लोग प्रसन्न रहते हैं। यदि उस लड़की से कभी कोई गलती भी हो जाती है तो लोग उस पर बिगड़ते नहीं, बल्कि कोमल शब्दों में उसे उसकी गलती समझा देते हैं। इससे आज्ञा माननेवाली लड़कियाँ हमेशा खुशदिल रहा करती हैं। प्रत्येक लड़की को यह बात याद कर लेनी चाहिये कि—

"यदि तुम खुश रहना चाहो तो दूसरों को खुश रखो।"

जो लड़की दूसरों को खुश रखती है, वह स्वयं भी खुश रहती है। जो लड़की दूसरों को खुश नहीं रखती, वह खुद भी खुश नहीं रहती।

यह याद रहे कि माता-पिता की सेवा करना तुम्हारा परम कर्तव्य है। क्योंकि पुत्र तो अपने माता-पिता की सेवा जिन्दगी भर करता है, पर तुम्हें इतना समय नहीं मिल सकता। जब तुम अपने घर चली जाओगी, तब माता-पिता की सेवा कैसे कर सकोगी? फिर तो माता-पिता का ऋण तुम्हारे सिर पर लदा रह जायगा। जिसने तुम्हें पाल-पोस कर सयानी किया, पढ़ाया-लिखाया, तुम्हारा मल-मूत्र फेंका, उसके प्रति तुम्हारा क्या कर्तव्य है, इसे तुम अपनी बुद्धि से ही सोच सकती हो।

वे लड़कियाँ अपराधिनी हैं, जो माता-पिता की सेवा नहीं करतीं और उनकी आज्ञा का पालन नहीं करतीं। माता का ऋण तो संसार में और भी बड़ा है। एक बार श्रवण ने हँसकर अपनी माता से पूछा—"माँ! मैंने तुम्हारी इतनी सेवा की, पर यह स्थिर नहीं कर सका कि अभी मैं तुम्हारा ऋण चुका सका या नहीं?"

माता ने उत्तर दिया—"बेटा! इसमें कोई सन्देह नहीं कि तुम

तरीखा माता-पिता की सेवा करनेवाला पुत्र संसार में दूसरा न
केन्तु यदि तुम सच्चा उत्तर चाहते हो तो सुनो! एक बार वर्फ गिर र
थी। उस समय तुम मेरी गोद में थे। हवा भी उस समय तेजी से च
रही थी। मेरे पास एक धोती के सिवाय और कोई वस्त्र नहीं था। मैं
अपने अञ्चल में ढँककर तुम्हें गोद में लिपटा रखा था। तुम्हारे पेश
से अञ्चल भींग गया। मैंने फौरन भींगे हुए हिस्से को अपनी कमर
लपेट लिया और दूसरा सिरा तुम्हें ओढ़ाया। थोड़ी ही देर के ब
तुमने मल-मूत्र दोनों त्याग किया। इससे धोती का वह भाग भी गी
हो गया। तब मैंने धोती के दो पर्त करके भीजे हुए हिस्से से तो अप
लज्जा का निवारण किया और बीच का सूखा वस्त्र तुम्हें ओढ़ाया।
प्रकार रात भर तुम्हारी रक्षा करने में मुझे सर्दी से जो कष्ट हु
उसका दसवाँ हिस्सा भी तुमने कष्ट नहीं सहन किया। मेरी उ
सेवाओं की तो चर्चा करने की जरूरत ही नहीं है।"

अच्छी सङ्गति

होत सुसंगति सहज सुख, दुख कुसंगत के थान।
गन्धो और लोहार की, देखो बैठि दुकान॥

जो लड़की गन्दगी से रहती हो, जो लड़की माँ-बाप तथा उ
वड़ों का कहना न मानती हो, जो लड़की गन्दी बातें करती
जो लड़की झगड़ालू हो, उस लड़की के साथ कभी मत रहो। अ
स्वभाव की लड़कियों के साथ रहने से अच्छा स्वभाव होता है
बुरी लड़कियों के साथ रहने से बुरा। संग का असर मन पर ब
। है। इसलिए बुरी लड़कियों से सदा दूर रहो, नहीं
से तुम भी वैसी हो जाओगी।

ट को छोड़कर अगर के साथ से सुगन्धित हो जाता है। शराव ज
गंगा की धारा में मिल जाती है, तब वह भी गंगाजल हो जाती है
केन्तु जब गंगाजल मदिरा यानी शराब में मिला दिया जाता है, त
वह गंगाजल भी शराब हो जाता है। ठीक यही हाल सुसंग औ
कुसंग का है।

कन्याओं का असली गहना

भोग रोग सम भूषन भारू। जम-जातना-सरिस संसारू॥

जो लड़कियाँ कंठहार, सिकड़ी, अनन्त, कड़ा, कर्णफूल आदि को अपना असली गहना समझती हैं, वे भूल करती हैं। ये तो ऊपरी और दिखावटी गहने हैं। असली गहना तो वह है, जिससे लोग प्रशंसा करें। वह गहना किस काम का जिससे लोग निन्दा करें। ऊपर के गहने तो केवल निन्दा करानेवाले हैं। क्योंकि इनके पहनने से लड़कियों में अभिमान बढ़ता है। अभिमान बहुत ही बुरी वस्तु है। जो लड़की अभिमान करती है, उसकी सब लोग निन्दा करते हैं। इसलिए यदि तुम अच्छी लड़की बनना चाहो तो ऊपर के गहनों से प्रेम न करो अभिमान को अपने दिल में न फटकने दो। कपड़े का, गहने का धन का, सुन्दरता का, परिवार का अभिमान न करो। किसी बड़ी-बूढ़ी के सामने अथवा सखी-सहेली के सामने कभी भी ऐसा भाव जाहिर न करो, जिससे कोई तुम्हें अभिमानी समझे। अभिमान तो ईश्वर का आहार [illegible] प्राणी का अभिमान दूर किये बिना परमात्मा शान्त नहीं

अभिमानी की एक कहानी

दक्षिण देश में रणधीर नामक एक बड़ा प्रतापी राजा था। देश-देश के राजे उसे कर देते थे। वह सब राजाओं को दास की तरह समझता था। एक बार उसने राजा सुरथ को गद्दी से उतार कर देश से बाहर निकाल दिया और उसके स्थान पर एक गरीब नौकर को गद्दी पर बैठा दिया। सुरथ अपने परिवार सहित जंगल में जाकर रहने लगा। सुरथ बड़ा धर्मात्मा राजा था। उसकी प्रजा उससे बहुत प्रेम करती थी। इसलिए अधिकांश प्रजा भी इसके साथ ही जंगल में जाकर बस गयी।

इस प्रकार थोड़े दिनों में जंगल आबाद हो गया। नगर का नाम सुरथपुर पड़ा और सबने सुरथ को अपना राजा बनाया। कुछ दिनों के बाद सुरथपुर नगर में जङ्गल के डाकू डाका डालने लगे। राजा सुरथ वेष बदल कर डाकुओं का पता लगाने के लिये घूमने लगा।

इधर रणधीर का घमण्ड दिनोंदिन बढ़ता गया। एक दिन पड़े-पड़े सोचने लगा कि मैं जिस राजा को चाहता हूं राह का भिखारी बना देता हूं और जिस दरिद्र को चाहता हूं। राजा बना देता हूं। अब मेरे शक्तिमान होने में कोई कसर नहीं है। यह अभिमान दिल में पैदा होते ही रणधीर के बुरे दिन आ गये।

अचानक वह एक दिन शिकार खेलने गया। हरिन का पीछा करते-करते वह इतनी दूर निकल गया कि रास्ता भूल गया। इतने ही में रात भी हो गयी। कुछ दूर आगे जाने पर उसे एक रोशनी दिखलाई पड़ी। फौरन वहां आ पहुंचा। देखा एक टीला था जिसके दरवाजे पर ताला जड़ा हुआ था। रणधीर अपनी तलवार के धक्के से ताला तोड़कर भीतर घुस गया। यह सजा हुआ किसी का तहखाना था। इसके भीतर एक बड़ा सा कमरा था, जिसके अन्दर बड़े मखमली गद्दे बिछे

हुए थे। मेवे आदि तथा ठंडा पानी भी कमरे में रक्खा हुआ
रणवीर ने थोड़ा मेवा खाकर पानी पिया और एक बिस्तरे पर लेट
थका तो था ही, पड़ते ही सो गया।

इतने में सुरथ के सवार डाकुओं का पता लगाते वहाँ आ पहुं
सारी बातों का मिलान करने पर उन्हें मालूम हुआ कि डाकुओं
अड्डा यही है। वे तहखाने के भीतर घुस गये और रणवीर को
समझकर बाँध दिया। नींद खुलते ही खुरणवीर अचम्भे में आ गय
पर बेचारा विवश था। सवारों ने तहखानों को लूट लिया और
रणवीर को ले सुरथपुर आये।

उस दिन यज्ञ की पूर्णाहुति में सात दिन की देरी थी। इसलिए
वीर को सात दिन जेल में रहना पड़ा। वहाँ उसे खाना-पीना
मिलता था। एक दिन एक भंगी जूठी पत्तलों की ढेर लिए उसी रा
से होकर अपने घर जा रहा था। भूखे रणवीर की नजर उस पर पड़
अधीर होकर कहा,—मैं बहुत भूखा हूँ, दया करके एक जूठी पत्त
मुझे दिये जाओ—तुम्हें बड़ा पुण्य होगा। उस भंगी ने कहा,—तू
बच्चों से अधिक प्यारा है न! क्योंकि तू मेरे नगर को लूटने वा
डाकू है। नीच कहीं का ' पत्तल माँगने में शर्म नहीं आती।

यह कहता हुआ भंगी आगे चला गया। इधर रणवीर धड़ाम
जमीन पर गिर गया। इस प्रकार सात दिन बीतने के बाद अभिमा
रणवीर न्याय के लिए राजा सुरथ के सामने पेश किया गया।
देखते ही सुरथ आश्चर्य में पड़ गया। पूछा—क्या तुम राजा रणव
तो नहीं हो?

रणवीर ने दीनता के साथ कहा,—राजा रणवीर तो नहीं,
आपका बन्दी रणवीर अवश्य हूँ।

सुरथ ने पूछा,—तुम डाकुओं के घर में कैसे पकड़े गये?

रणवीर ने सारा हाल कह सुनाया। राजा सुरथ ने फौरन उठ

से छाती से लगा लिया और बड़े आदर से लाकर सिंहासन पर अपने बगल में बैठाया। इतना ही नहीं बल्कि राजा सुरथ ने रणवीर को अच्छे-अच्छे पदार्थ खिलाये और अच्छे वस्त्र भी पहना दिये।

सुरथ का यह व्यवहार देखकर रणवीर बहुत लज्जित हुआ अब उसे अपने घमण्ड पर पश्चाताप होने लगा। कहा—धन्य हो राजा सुरथ, तुम धन्य हो! यदि तुम सचमुच मुझपर दया करते हो तो मेरी यह प्रार्थना भी स्वीकार करो कि अपने राज्य को मुझसे वापस ले लो।

सुरथ ने कहा,—क्षत्रिय होकर मैं ऐसी दक्षिणा लेना स्वीकार नहीं कर सकता।

रणवीर ने कहा,—दक्षिणा कैसी! यदि तुम मुझे अभी फाँसी पर लटका दो तो क्या मेरे समूचे राज्य पर तुम अधिकार नहीं जमा सकोगे? यदि मेरी यह प्रार्थना स्वीकार नहीं करोगे, तो मैं अपनी राजधानी में कदापि नहीं जाऊँगा और जंगल में जाकर प्राण दे दूँगा।

लाचार होकर राजा सुरथ को रणवीर की बात स्वीकार करनी पड़ी। इस प्रकार अभिमानी रणवीर का घमंड धूल में मिल गया और सन्तोषी राजा सुरथ को खोया हुआ राज्य वापस मिला।

इससे तुम समझ सकती हो कि अभिमान करना कितना बुरा है। इसलिए ऐसा कोई काम न करो या ऐसी कोई बात मुँह से न निकालो, जिससे अभिमान जाहिर हो। शरीर के गहनों से मन में अभिमान पैदा होता है, इसलिए उनसे शौक न करो। लड़कियों का सबसे प्रधान गहना है कोमलता और सरलता। दूसरा गहना है संकोच, तीसरा गहना है शील, चौथा दया, पाँचवाँ सन्तोष, छठाँ क्षमा, सातवाँ स्नेह और आठवाँ गहना साहस है। नवाँ गहना है धैर्य और दसवाँ गहना सच बोलना है। इसपर एक कहानी याद आ रही है, सुनो। इस

यह कह कर सर्दार ने लड़के को पाँच सौ अशर्फियों का एक और उसका रुपया दे दिया और साथ ही सब यात्रियों का लौटाकर उनसे क्षमा माँगी।

इस प्रकार उस लड़के ने अपनी सचाई के प्रभाव से उन डाकुओं पापी हृदय का सुधार किया और काफी धन लेकर अपनी स्नेह माता की गोद में आ गया।

इसलिए प्यारी वेटियो! तुम इन्हीं गहनों के पहनने से तुम्हा शोभा वढ़ेगी। यदि तुम इन गहनों को धारण करोगी तो तुम्हारे माता पिता तुम्हें जन्म देकर धन्य होंगे। साथ ही परमात्मा भी तुम प्रसन्न रहेंगे। गुणवती लड़की अपने गुणों के प्रभाव से सदा रहती है और उसे किसी चीज की कमी नहीं रहती।

बुराइयों से वचो

काम क्रोध-मद-लोभ की, जब लगि मन में खान।
तब लगि पंडित मूरखौ, तुलसी एक समान॥

किसी पर क्रोध करना, किसी चीज की लालच करना आदि बड़े दोष है। जिस लड़की में ये दोष होते हैं, वह लड़की न कभी उन्नति कर सकती है और न उसकी देशपुर में प्रशंसा होती है पहले क्रोध को ही देखो। यह जिस आदमी में रहता है, उसे डालता है। क्रोधी आदमी कभी सुखी और प्रसन्न नही रहता। हमेशा शरीर को भीतर और बाहर से भस्म करता रहता है।

इसी प्रकार लालच भी बहुत बुरी चीज है। कोई चीज पाने कभी लालच न करो। जो चीज तुम्हारे माँ-बाप दें, उसी रहो। यदि किसी को अच्छी चीज खाते या पहनते देखो लेने की इच्छा न करो।

अपने मुंह से किसी सहेली की या और किसी स्त्री की बुराई न
करो। क्योंकि निन्दा करना बहुत बड़ा पाप है। जो लड़की दूसरों की
नन्दा करती है, उसकी निन्दा दूसरे लोग करने लगते हैं और झगड़ा
ऊपर से होता है। सोचो तो सही, यदि कोई तुम्हारी निन्दा करे और
उसे तुम सुन पाओ, तो तुम्हें बुरा मालूम होगा या नहीं? इसी प्रकार
तुम जिसकी निन्दा करोगी, वह भी सुनने पर बुरा मानेगी और तुम्हारी
निन्दा करेगी। इसका फल यह होगा कि व्यर्थ ही आपस में द्वेष हो
जायगा।

चोरी की भी आदत न डालो। किसी बाहरी आदमी की चीज को
न कहे, घर में छोटी से लेकर बड़ी चीज तक अपने बड़ों से बिना
गे न लो। क्योंकि यह आदत बहुत बुरी है। इससे तुम्हारा विश्वास
ता रहेगा और धीरे-धीरे आदत बिगड़ जायगी। चोरी की आदत
से पड़ जाती है और उसका फल क्या होता है, सुनो :—

एक दिन एक लड़का मौका पाकर स्कूल से किसी लड़के की एक
ताब चुरा लाया। इससे उसकी माँ बहुत प्रसन्न हुई और उस किताब
। चार आने में बेच आयी। जिसमें चार पैसे तो उसने लड़के को
ठाई खाने के लिए दे दिया और बाकी पैसा अपने पास रख लिया।
र तो लड़का बराबर कोई-न-कोई चीज चुराने का मौका ढूंढ़ने लगा।
ब कभी उसे मौका मिलता वह फौरन कोई चीज चुरा ले आता और
ता को खुश करता।

इस प्रकार वह कुछ दिनों में पक्का चोर हो गया। सब लोग उसका
म सुनकर डरने लगे। एक दिन उसने जेवर छीनने के लिए जंगल में
सी महाजन के लड़के को मार डाला। संयोगवश उसी दिन वह
गिरफ्तार भी हो गया। अन्त में वहाँ के राजा ने उसे उसी दिन फाँसी
की आज्ञा दी।

जिस दिन उसे फाँसी होनेवाली थी, उस दिन बहुत से लोग तमाशा

यह कह कर सर्दार ने लड़के को पाँच सौ अशर्फियों का एक और उसका रुपया दे दिया और साथ ही सब यात्रियों का ध लौटाकर उनसे क्षमा माँगी।

इस प्रकार उस लड़के ने अपनी सचाई के प्रभाव से उन डाकु पापी हृदय का सुधार किया और काफी धन लेकर अपनी स्ने माता की गोद में आ गया।

इसलिए प्यारी बेटियो ! तुम इन्हीं गहनों के पहनने से तुम शोभा बढ़ेगी। यदि तुम इन गहनों को धारण करोगी तो तुम्हारे म पिता तुम्हें जन्म देकर धन्य होंगे। साथ ही परमात्मा भी तुम प्रसन्न रहेंगे। गुणवती लड़की अपने गुणों के प्रभाव से सदा प्र रहती है और उसे किसी चीज की कमी नहीं रहती।

बुराइयों से बचो

काम क्रोध-मद-लोभ की, जब लगि मन में खान।
तब लगि पंडित मूरखौ, तुलसी एक समान॥

किसी पर क्रोध करना, किसी चीज की लालच करना आदि बड़े दोष हैं। जिस लड़की में ये दोष होते है, वह लड़की न कभी उन्नति कर सकती है और न उसकी देशपुर में प्रशंसा होती पहले क्रोध को ही देखो। यह जिस आदमी में रहता है, उसे डालता है। क्रोधी आदमी कभी सुखी और प्रसन्न नहीं रहता। ब हमेशा शरीर को भीतर और बाहर से भस्म करता रहता है।

इसी प्रकार लालच भी बहुत बुरी चीज है। कोई चीज पाने कभी लालच न करो। जो चीज तुम्हारे माँ-बाप दें, उस यदि किसी को अच्छी चीज खाते या पहनते देखो करो।

अपने मुँह से किसी सहेली की या और किसी स्त्री की बुराई न रो। क्योंकि निन्दा करना बहुत बड़ा पाप है। जो लड़की दूसरों की न्दा करती है, उसकी निन्दा दूसरे लोग करने लगते हैं और झगड़ा पर से होता है। सोचो तो सही, यदि कोई तुम्हारी निन्दा करे और से तुम सुन पाओ, तो तुम्हें बुरा मालूम होगा या नहीं ? इसी प्रकार म जिसकी निन्दा करोगी, वह भी सुनने पर बुरा मानेगी और तुम्हारी न्दा करेगी। इसका फल यह होगा कि व्यर्थ ही आपस में द्वेष हो ायगा।

चोरी की भी आदत न डालो। किसी बाहरी आदमी की चीज को ौन कहे, घर में छोटी से लेकर बड़ी चीज तक अपने बड़ों से बिना ागे न लो। क्योंकि यह आदत बहुत बुरी है। इससे तुम्हारा विश्वास ाता रहेगा और धीरे-धीरे आदत बिगड़ जायगी। चोरी की आदत ैसे पड़ जाती है और उसका फल क्या होता है, सुनो :—

एक दिन एक लड़का मौका पाकर स्कूल से किसी लड़के की एक ताब चुरा लाया। इससे उसकी माँ बहुत प्रसन्न हुई और उस किताब ो चार आने में बेच आयी। जिसमें चार पैसे तो उसने लड़के को मिठाई खाने के लिए दे दिया और बाकी पैसा अपने पास रख लिया। फेर तो लड़का बराबर कोई-न-कोई चीज चुराने का मौका ढूँढ़ने लगा। ब कभी उसे मौका मिलता वह फौरन कोई चीज चुरा ले आता और ाता को खुश करता।

इस प्रकार वह कुछ दिनों में पक्का चोर हो गया। सब लोग उसका ाम सुनकर डरने लगे। एक दिन उसने जेवर छीनने के लिए जंगल में किसी महाजन के लड़के को मार डाला। संयोगवश उसी दिन वह गिरफ्तार भी हो गया। अन्त में वहाँ के राजा ने उसे उसी दिन फाँसी की आज्ञा दी।

जिस दिन उसे फाँसी होनेवाली थी, उस दिन बहुत से लोग तमाशा

देखने के लिए फाँसी घर के सामने एकत्र हो गये। उसी भीड़ में उ
माँ भी वहाँ गयी। लड़के को अपनी माँ से अन्तिम भेंट करने
आज्ञा मिली। उसने अपनी माँ की ओर इशारा किया। वह
उसके पास पहुँचा दी गयी। उसने बात करने के बहाने अपना मुँह
के कान की ओर झुकाया। देखते-ही-देखते उसने अपने दाँतों से
माँ का कान पकड़ लिया और इतने जोर से दबाया कि कान
अलग हो गया।

उसकी माँ मूर्च्छित होकर जमीन पर गिर पड़ी। सब लोग क
लगे—अरे पापी! तूने यह क्या किया? लड़के ने हाथ जोड़कर क
भाइयो, आप लोग मुझपर नाराज न हों। यदि आप लोग इ
असली कारण जान जायँगे तो शायद इसी दुष्टा को कोसेंगे। जब
छोटा था और कुछ-कुछ चोरी करना सीख रहा था, तब यह इत
मेरी माता होकर भी मुझे चोरी करने से रोकती नहीं थी, बल्कि
मुझे इनाम दिया करती और मेरी प्रशंसा किया करती थी। आज
इस प्रकार मेरी मृत्यु हो रही है, वह इसी पापिनी के कारण हो रही है
मेरी समझ से इससे बढ़कर मेरा शत्रु और कोई नहीं है।

उसकी यह बात सुनकर सब लोग चुप हो गये और वह फाँसी
लटका दिया गया।

कुछ देवियों की जीवनियाँ

दलन मोह-तम सो सुप्रकासू। बड़े भाग्य उर आवइ जासू।
उघरहिं विमल विलोचन ही के। मिटहिं दोष दुख भव रजनी के।

कृष्णा कुमारी

चित्तौर के राजा महाराणा भीमदेव की कन्या कृष्णा कुमारी थी
वह पढ़ी-लिखी और गुणवती लड़की थी। जब विवाह

ग्य हुई, तब महाराणा ने उसका विवाह मारवाड़ के राजा के साथ रना स्थिर किया। किन्तु विवाह होने के पहले ही मारवाड़-नरेश की त्यु हो गयी। फिर उसका विवाह अम्बरनरेश जगतसिंह के साथ हराया गया। इधर मारवाड़ के नये महाराज मानसिंह ने कहा कि दि पहले राजा मर गये तो अब उनकी जगह पर मैं हूँ। इसलिए मैं विवाह करूँगा। सेंधिया-नरेश ने मानसिंह की तरफदारी की।

दोनों राजाओं में घमासान लड़ाई हुई। खून की नदी बह चली। अन्त में मानसिंह और जगतसिंह ने चित्तौर के पास डेरे डाल दिये और दोनों एक दूसरे के ही नाश को नहीं, बल्कि चित्तौर को उलटने के लिए तैयार हो गये। मानसिंह ने कहला भेजा कि कृष्णाकुमारी का विवाह मारवाड़-नरेश से ठहरा था न कि किसी दूसरे नरेश से। इसलिए कुमारी का व्याह मेरे ही साथ होना चाहिये; क्योंकि मैं ही इस समय उस गद्दी पर हूँ।

इधर महाराणा साहब जगतसिंह को वचन दे चुके थे। अब वह बड़े चक्कर में पड़ गये। जिस महाराणा के सामने समूचे भारत के रजवाड़े सिर झुकाये रहते थे, वही महाराणा समय के फेर से आज अपनी कन्या का विवाह अपनी इच्छा के अनुसार नहीं कर सकते थे।

आपस में ऐसी फूट पैदा हुई कि बाहर से जो चढ़ाई हुई, वह और किसी जाति की नहीं राजपूतों की। यदि महाराणा के पास संगठित सेना होती और उनका पूर्व गौरव पहले की ही भांति बना रहता तो क्या मजाल थी कि दूसरे राजा इस प्रकार आपस में लड़ते और दोनों चित्तौर का नाश करने पर उतारू हो जाते।

महाराणा की सारी बहादुरी आपस की फूट से पहले ही नष्ट हो चुकी थी। इसलिए मेवाड़ की रक्षा करने के लिए उन्हें केवल एक ही उपाय सूझा। वह यह कि इस झगड़े को आग कुमारी के खून से बुझायी जाय। इस काम के लिए महाराणा ने जीवनदास की सहायता माँगी।

यह एक तरह से महाराणा के भाई लगते थे। उनको इस काम आवश्यकता समझायी गयी और कहा गया कि यह काम आदमी से नहीं कराया जा सकता। इस पर इन्होंने कृष्णा का करना स्वीकार कर लिया।

जब वह नंगी तलवार लेकर प्यारी कृष्णा के कमरे में गये, सुन्दरी कृष्णा की भोली-भाली शक्ल देखते ही उनके हाथ से नीचे गिर गयी। इससे वह वहाँ से उदास होकर लौट आये।

अब महाराणा ने इस संकट से छुटकारा पाने के लिए कृष्णा विष देकर मारना स्थिर किया। वीर बाला कुमारी कृष्णा ने पिता भेजे हुए कटोरे के विष को हर्ष के साथ पी लिया। उसने अपने पि की आयुवृद्धि के लिए ईश्वर से प्रार्थना भी की। उसकी माता रान को धिक्कारती थी, पर कुमारी प्रसन्न चित्त से उसे समझाती थी— तुम दुखी क्यों हो रही हो? संसार की विपत्तियों को सहन करने समय मेरे लिए और कब आवेगा? मैं राजपूत-कन्या हूँ, मौत से न डरती। अब तुम मेरे लिए उदास मत हो और मेरा अन्तिम प्र स्वीकार करो। माँ! मेरे मरने से मेरे देश और जाति की रक्षा है, इससे मैं बड़ी भाग्यवती हूँ। अहा! अपना प्राण त्यागकर मैं अ देश को बचाऊँगी। माँ, मुझे विदा दो और मेरे अपराधों क्षमा करो।

कृष्णाकुमारी बड़ी देर तक इस प्रकार अपनी माता को समझ रही, पर विष का कोई असर नहीं मालूम हुआ। तब दूसरा क गया। उसे भी वह प्रसन्नता के साथ पी गयी, पर कोई । तब तीसरा कटोरा दिया गया और उसका भी कोई तब तो हलाहल विष का चौथा कटोरा बनाया गया। पु भाँति उसे भी पी लिया। इस कटोरे ने अपना काम अ पूर्ण किया।

देश, जाति और पिता को संकट से दूर करने के लिए प्राण देनेवाली कुमारी कृष्णा सदा के लिए सो गयी। माता ने भी कन्या के शोक में खाना-पीना छोड़कर कुछ ही दिनों में अपनी प्यारी पुत्री का साथ दिया। हे प्रभो! हमारे देश की सब कन्याएँ अपने देश और धर्म की मान-मर्यादा की रक्षा के लिए इसी प्रकार अपने को निछावर कर दें।

कुमारी पद्मावती

भोपाल राज्य के जंगल के एक गाँव में हरदयालसिंह नामक राजपूत रहते थे। उनके घर में वह, उनकी स्त्री, एक कन्या तथा एक पुत्र कुल चार प्राणी थे। वह बड़े सज्जन और बहादुर आदमी थे। पहले वह भोपाल राज्य की सेना में नौकरी करते थे और अपनी वीरता के कारण राजा के बहुत प्रिय थे। बुढ़ाई आने पर उन्हें नौकरी छोड़ देनी पड़ी। गरीब होते हुए भी वह सदा प्रसन्न रहा करते थे। उनके पुत्र का नाम जोरावरसिंह था और कन्या का नाम था पद्मावती देवी।

कुछ ही दिनों में अपने दोनों अबोध बच्चों को अनाथ छोड़कर हरदयालसिंह अपनी स्त्री सहित चल बसे। घर में दो-चार रुपये थे, वे उनके क्रिया-कर्म में खर्च हो गये। जोरावरसिंह मजदूरी करके अपना और अपनी बहन का निर्वाह करने लगा। उसे अपनी चिन्ता उतनी नहीं रहती थी, जितनी पद्मावती की। पद्मा को वह बहुत प्यार करता था। पद्मा को अकेली छोड़कर वह कहीं नौकरी करने नहीं जाता था। मजदूरी कम मिलने के कारण वह खुद भूखा सो जाता था, पर पद्मा को पेट भर खिला देता था। चाहे उसे भोजन न मिले, पर पद्मा को वह मिठाई वगैरह तरह-तरह की चीजें जरूर खिलाता था।

यह था जोरावरसिंह का बहन के प्रति आदर्श प्रेम! धीरे-धीरे

पद्मा बारह वर्ष की हो गयी। जोरावरसिंह ने उसे गृहस्थी का काम सिखलाया ही, साथ ही हथियार चलाने, घोड़े की सवारी करने, शि खेलने आदि में भी उसे निपुण कर दिया।

पद्मा ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती थी, त्यों-त्यों उसका खर्च भी ब जाता था। इसका परिणाम यह हुआ कि जोरावरसिंह पर कर्ज दि दिन बढ़ने लगा। जोरावरसिंह कर्ज की बात को पद्मा से छिपा रख था। इसलिए कि कर्ज का हाल सुनकर पद्मा को कष्ट होगा। पर ही दिनों में तगादेवालों के आने-जाने से पद्मा कर्ज की बात जान गयी इससे वह मन-ही-मन भाई का कष्ट दूर करने के लिए चिन्तित र लगी।

एक दिन एक महाजन ने पद्मावती के दरवाजे पर आकर जोरा सिंह का बहुत बुरा-भला कहा। उस समय वह घर में नहीं था। प ने कहा—काकाजी, भैया आपका रुपया देने की पूरी चेष्टा कर रहे हैं जैसे इतने दिनों तक आपने सब्र किया, वैसे थोड़े दिनों तक और र करें। यह कहकर वह आँसू पोंछती हुई घर के भीतर चली गयी।

महाजन उस समय तो मान गया, पर घर पहुँचने पर उसने सो कि इस पर बहुत से लोगों का रुपया बाकी है और इसकी बहन अब ब्याहने के योग्य हो गयी है, ऐसी दशा में यह कर्ज कैसे चु सकेगा। इससे रुपया वसूल करने के लिए नालिश कर देना ही अ है। यह सोचकर उसने भोपाल राज्य में उस पर दावा दायर दिया। इतना ही नहीं, उसने तबतक के लिए जोरावरसिंह को जेल भे दिया, जबतक कि उसका कर्ज अदा न हो जाय।

अब पद्मा घर में अकेली रह गयी। उसके दुःख का ठिकाना वह बेहोश होकर गिर पड़ी। दो-तीन दिन के बाद उसने सो इस प्रकार अपने को मिटा देना और भाई को जेल में सड़ने दे ही है। यदि इस समय मैंने माँ के गुणों का परिचय न दि

ने प्राण-प्रिय भाई को न छुड़ाया तो मेरे स्त्री-जीवन पर धिक्कार है।
प्रकार निश्चय करके वह घर से बाहर निकल पड़ी।

उस समय सिन्धिया-नरेश दौलतरावजी ग्वालियर की गद्दी पर
नका अंग्रेजों के साथ युद्ध होता ही रहता था, इसलिए हमेशा
अच्छे वीर उनकी सेना में भरती होते रहते थे। सुबह और शाम
द होती थी।

र्मी के दिन थे। शाम की कवायद से लोग लौटे थे। सब लोग
। से तर टहल-टहल कर थकावट दूर कर रहे थे। सेनापति अपने
के सामने मैदान में बैठा हवा खा रहा था। नौकर लोग सेवा में
र थे। इसी समय एक युवक ने सामने आकर सेनापति को सैनिक
से प्रणाम किया।

सेनापति ने उसके गठीले बदन और सुन्दर चेहरे को देखकर पूछा—
कौन हो?

युवक ने त्तर दिया—मैं एक राजपूत हूँ। मेरा नाम पद्मसिंह है।
की सेना में भरती होने के लिए यहाँ आया हूँ।

सेनापति ने कहा—तुम्हारी अवस्था तो अभी सेना में भरती होने
ायक नहीं है। फिर भी तुम्हें मैं इस उम्मीद पर भरती कर लेता
क भविष्य में तुम एक बहादुर सिपाही होगे। जाओ, जमादार को
ना नाम पता लिखा दो।

पद्मसिंह का नाम सैनिकों में लिख लिया गया। दूसरे दिन से वह
सैनिक-शिक्षा में जाने लगा। उसकी सैनिक-योग्यता देखकर सेना-
के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। दौड़ते हुए घोड़े पर से उसका
ोक से ठीक निशाना मारना देखकर तो सेनापति भी दंग रह
ना पड़ा।

एक ही महीने में पद्मसिंह को शत्रुओं से कई मोरचे लेने पड़े। सब
उसकी विजय हुई। उसने दो-तीन बार सेनापति की अपनी जानपर

खेलकर काल के मुख से बचा लिया। इससे सेनापति को वह भी अधिक प्रिय हो गया। उसने बहुत जल्द उसे ऊँचा पद दे दि

यह कहने की जरूरत नहीं कि पद्मसिंह ही पद्मावती देवी है। सैनिकों के बीच में रहती हुई भी पद्मावती प्रतिदिन स्नान और ध्यान करती थी, किन्तु उसे कोई पहचान नहीं पाता था।

एक दिन नदी में स्नान करके वह कपड़े बदल रही थी। उस पर एक सैनिक की नजर पड़ी। उसके आश्चर्य का ठिका रहा। उसने जाकर सारा भेद सेनापति से कहा। सेनापति ने प को बुलाकर सैनिक का कहना सुना दिया और शपथपूर्वक उसे बात बतला देने को कहा। पद्मावती ने अपने ऊपर की बीती बा सच-सच कह सुनाया। भाई के कष्ट का हाल सुनाते समय उसकी छलछला पड़ीं।

सेनापति ने उसकी सराहना करते हुए कहा—बेटी, धीरज मैं दरबार में प्रार्थना करके बहुत जल्द तेरे भाई को जेल से करा दूँगा। ऐसी वीर कन्या का भाई क्या कभी जेल में रहने सकता है?

उसी दिन शाम को दरबार में जाकर सेनापति ने पद्मा का हाल महाराज से कहा। देवी की बहादुरी सुनकर दौलतराव च गये। उन्होंने तुरन्त पद्मावती को अपने पास बुलाकर उसके मु सारा हाल सुना। बाद गद्गद होकर भोपाल नरेश को एक पत्र कि जोरावरसिंह को मेरे यहाँ भेज दो। महाराज का सब रुपया से चुका दिया गया। जोरावरसिंह सिन्धिया-नरेश के पास आकर प्रेम से बिछुड़ी हुई अपनी प्यारी बहन से मिला।

पद्मावती को सेनापति अपनी कन्या के समान मानने लगा। को महाराज ने अपनी ड्योढ़ी पर जमादार बना एक प्रतिष्ठित राजपूत कन्या के साथ उसका विवाह कर दिय

धीरे-धीरे उसकी पदवी बढ़ाकर महाराज ने उसे बहुत अच्छी दशा में कर दिया। सेनापति ने पद्मावती का विवाह बड़ी धूम-धाम से एक ऊँचे वंश के नवयुवक क्षत्रिय से करके अपनी उदारता का परिचय दिया।

राजकुमारी तारा

जिस समय दिल्ली के तख्त पर मुसलमान बादशाह अलाउद्दीन की तूती बोल रही थी, उस समय एक छोटा राज्य बिजनौर था, जिसका राजा शूरसेन था। शूरसेन अपनी प्रजा से बहुत प्रेम करता था। शूरसेन के एक लड़की थी, जिसका नाम था तारा।

अलाउद्दीन बराबर अपना राज्य बढ़ाता जा रहा था। धीरे-धीरे उसने बिजनौर को भी इधर-उधर से दबा लिया। पर अपनी थोड़ी ताकत समझकर शूरसेन चुप रहा।

शूरसेन के इस मौन का फल बुरा हुआ। उसे चुप देखकर मुसलमानों का हौसला बहुत बढ़ गया। वे रियासत का और हिस्सा हड़पने लगे। आखिर सहन की भी सीमा होती है। इसलिए शूरसेन को उनका मुकाबला करना पड़ा। यद्यपि मुसलमानों की अपार सेना के सामने उन्हें हार खानी पड़ी और वे नाममात्र के लिए राजा रह गये, तथापि इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह लड़े बड़ी बहादुरी से।

इससे वह बहुत दुखी रहने लगे। उनके दुःख को तारा समझती थी। इस समय तारा की अवस्था केवल दस वर्ष की थी।

समय पाकर तारा युद्ध विद्या सीखने लगी। यह विद्या वह अपने पिता से ही सीख रही थी। घोड़े पर चढ़ने, तीर-तलवार-भाला चलाने और शब्दवेधी बाण-विद्या आदि में चतुर हो गयी। उसका शरीर बलवान् और गठीला था। इस समय उसकी अवस्था अट्ठारह वर्ष की हो

यह वादा करा लिया गया कि हाथों के कंकण तभी खुलेंगे, जब ाअफगान का सिर काट दिया जायगा।

अब तो दोनों ही लैला के मारने की ताक में रहने लगे। मुहर्रम दिन जब ताजियों का जनाजा उठ रहा था, 'हा हुसेन' की आवाज ाथ सब मुसलमान छाती पीटते हुए आगे बढ़ रहे थे, उसी समय ा ने देखा कि दो जवान राजपूत घोड़ों पर सवार भीड़ को चीरते उसी की ओर चले आ रहे हैं। और लोगों ने तो यह समझा कि तमाशबीन हैं, लेकिन लैला समझ गया कि इसमें कुछ रहस्य है। ा भर में ही उसने अपने साथियोंको इशारा किया। फौरन कुछ हथि- र बन्द सिपाही उसके पास आ गये। लैला ने हुक्म दिया कि आते दोनों राजपूतों को यहाँ से हटा दो। इतने ही में एक राजपूत उसके र पर आ गया और लोगों के देखते-देखते उसने ऐसा तुला हुआ र चलाया कि एक ही हाथ में लैला का सिर उसकी धड़ से अलग कर गेंद की तरह जमीन पर लुढ़कने लगा। जवान की आँखों से ग की चिनगारियाँ निकल रही थीं। उस जवान के मुँह पर मूछें न । वह स्वयं वीर कन्या तारा थी, जो पृथ्वीराज को साथ लेकर अपने ता के वैर का बदला लेने आयी थी। आज दुश्मन को मारकर उसने पनी इच्छा पूरी की।

लैला की मौत का हाल बात की बात में चारों ओर फैल गया। रनेवाले को पकड़ने के लिए चारों ओर सैकड़ों आदमी टूट पड़े न्तु किसी की हिम्मत न पड़ी। तारा सनन-सनन अपने गढ़ के टक पर आ पहुँची। यहाँ शत्रु का एक हाथी पहले ही से उसे रोकने लिए खड़ा था। किन्तु इससे तारा जरा भी विचलित नहीं हुई। सने पीछे फिर देखा, घोड़े पर सवार पृथ्वीराज चले आ रहे थे और ार सवार उनका पीछा कर रहे थे। तारा ने क्रुद्ध होकर हाथी पर ार किया। हाथी ने तारा के सहित उसके घोड़े को पकड़ने की बड़ी

चुकी थी। उसके सौन्दर्य और गुणों की प्रशंसा सुनकर बहुत से
पूत उसके साथ विवाह करने के लिए इच्छुक हो गये। किन्तु
ब्याह के लिए शर्त्त लगा दी कि मैं उसी वीर के साथ ब्याह कर
जो शत्रु मुसलमान का सिर काट लाकर मुझे देने की प्रतिज्ञा करेगा

तारा की यह प्रतिज्ञा सुनकर कितने ही राजपूतों के हौसले पस्त
गये किन्तु पृथ्वीराज के भाई जयमल ने कहला भेजा कि मैं यह
पूरी करूँगा। जयमल विवाह की लालच से बिजनौर में ही
रहने लगा। पहले सोचा कि कुछ दिनों में मैं तारा को वश में
उसकी प्रतिज्ञा तुड़वा दूँगा और यदि शत्रु को न मार सका तो तारा
ब्याह कर लूँगा। किन्तु उसके विचार तारा से छिपे न रहे।

एक दिन जयमल एकान्त में पाकर तारा से कुछ हँसी करने
इससे तारा के शरीर में आग-सी लग गयी। वह क्रोध से लाल
उठी। बोली—बिना प्रतिज्ञा पूरी किये ऐसी बातें करने में तुम्हें
नहीं आती? आज से फिर कभी इस तरह की हँसी करने का साहस
मत करना।

नीच और पापियों के दिलपर दूसरों की बातों का असर
पड़ता है—खासकर स्त्रियों का। जयमल ने फिर एक दिन उसी तरह
की बातें कीं। तारा क्रोध से भर गयी। उसने फौरन् म्यान से तलवार
निकाल कर एक ही वार में जयमल का काम तमाम कर दिया।

पृथ्वीराज की वीरता उस समय चारों ओर विख्यात थी। उसने
अपने भाई को इस प्रकार मृत्यु होने का समाचार सुना तो उसे बड़ा
दुःख हुआ। उसने क्रुद्ध होकर तारा के शत्रु को मारने और तारा से
ब्याह करने की प्रतिज्ञा की।

विवाह का दिन निश्चित गया। तारा का विवाह पृथ्वीराज के
साथ बड़ी धूम-धाम से विवाह के मडप में ही पृथ्वीराज

ह वादा करा लिया गया कि हाथों के कंकण तभी खुलेंगे, जब अफगान का सिर काट दिया जायगा।

अब तो दोनों ही लैला के मारने की ताक में रहने लगे। मुहर्रम दिन जब ताजियों का जनाजा उठ रहा था, 'हा हुसेन' की आवाज साथ सब मुसलमान छाती पीटते हुए आगे बढ़ रहे थे, उसी समय ा ने देखा कि दो जवान राजपूत घोड़ों पर सवार भीड़ को चीरते उसी की ओर चले आ रहे हैं। और लोगों ने तो यह समझा कि तमाशबीन हैं, लेकिन लैला समझ गया कि इसमें कुछ रहस्य है। ा भर में ही उसने अपने साथियोंको इशारा किया। फौरन कुछ हथि-र बन्द सिपाही उसके पास आ गये। लैला ने हुक्म दिया कि आते दोनों राजपूतों को यहाँ से हटा दो। इतने ही में एक राजपूत उसके र पर आ गया और लोगों के देखते-देखते उसने ऐसा तुला हुआ थ चलाया कि एक ही हाथ में लैला का सिर उसकी धड़ से अलग कर गेंद की तरह जमोन पर लुढ़कने लगा। जवान की आँखों से ाग की चिनगारियाँ निकल रही थीं। उस जवान के मुँह पर मूछें न ीं। वह स्वयं वीर कन्या तारा थी, जो पृथ्वीराज को साथ लेकर अपने ाता के वैर का बदला लेने आयी थी। आज दुश्मन को मारकर उसने अपनी इच्छा पूरी की।

लैला की मौत का हाल बात की बात में चारों ओर फैल गया। ारनेवाले को पकड़ने के लिए चारों ओर सैकड़ों आदमी टूट पड़े न्तु किसी की हिम्मत न पड़ी। तारा आनन-फानन अपने गढ़ के ाटक पर आ पहुँची। वहाँ शत्रु का एक हाथी पहले ही से उसे रोकने े लिए खड़ा था। किन्तु इससे तारा जरा भी विचलित नहीं हुई। उसने पीछे फिर देखा, घोड़े पर सवार पृथ्वीराज चले आ रहे थे और चार सवार उनका पीछा कर रहे थे। तारा ने क्रुद्ध होकर हाथी पर ार किया। हाथी ने तारा के सहित उसके घोड़े को पकड़ने की बड़ी

चेष्टा की, पर तारा की बुद्धिमानी, चपलता और फूर्ती के कारण ए
एक न चली। महावत परेशान हो गया। हाथी भी घायल
चिग्घाड़ता हुआ भाग खड़ा हुआ।

वीर वाला तारा अपनी सेना में पृथ्वीराज सहित जा मिली।
ही में शत्रु-सेना भी आ गयी। दोनों का मुकाबला हुआ। तारा ने
की बात में शत्रुओं को काट-काटकर जमीन पर बिछा दिया।
पहले ही मर चुका था। बिना सरदार के सेना कब तक डटी रह
बची हुई सेना जान लेकर भागी। इस प्रकार कुछ ही दिनों के
बिजनौर राज्य के डौंक के किले पर फिर राजपूती झण्डा
लगा।

इतिहास में शायद ही ऐसी किसी वीर वाला का चरित्र पढ़ने
मिला हो, जिसने अपने पिता के गये हुए राज्य को इस प्रकार सा
वीरता, धीरता और चतुरता से लौटाया हो। देवी तारा का वृत्त
स्त्री-जाति के लिए बड़े गौरव की वस्तु है।

लीलावती।

यह वृत्तान्त भारतवर्ष की एक विदुषी कन्या का है,
अपनी बुद्धिमानी और विद्वत्ता से भारतवर्ष का मस्तक
ऊँचा किया ही साथ ही संसार को यह दिखला दिया कि भारत कि
भी बात में दूसरे देश से कम नहीं है।

लीलावती के पिता बड़े विद्वान् और ज्योतिष-शास्त्र के अपूर्व पं
समय ज्योतिष में उनके समान विद्वान् कोई नहीं था।
चेहरा ही देखकर बहुत-सी बातें बतला देते थे जो
थीं। हाथ देखकर वह ठीक-ठीक आयु बतला देते थे।
कन्या लीलावती देवी सचमुच देवी ही थीं। लीलावती

हुत सुशील, गुणवती और बुद्धिमती थीं। उन्होंने भी अपने पिता से णित की उच्चकोटि की शिक्षा प्राप्त की थी।

किन्तु ऐसी रूपवती और गुणवती कन्या को पाकर भी उसके पिता दा दुखी रहा करते थे। कारण यह था कि वह ज्योतिष से जान गये कि लीलावती के भाग्य में पति का सुख नहीं लिखा है। यदि किसी के साथ लीलावती का विवाह कर दिया जायगा तो लीलावती विधवा हो जायगी। अन्त में उन्होंने सोच-विचार कर एक उपाय और मुहूर्त स्थिर किया कि यदि इस मुहूर्त में और इस उपाय से लीलावती का विवाह किया जाय तो वह विधवा होने से बच सकती है।

बाद उन्होंने लीलावती के योग्य एक वर ठीक किया। विवाह के दिन बारात लीलावती के दरवाजे पर आयी। लीलावती के पिता ने एक कटोरा बनवाया और उसके बीच में एक छेद करा दिया। उन्होंने यह जान लिया था कि यदि वह कटोरा जल के ऊपर रख दिया जायगा और दो घंटे में पानी में डूब जायगा तथा उसी समय लीलावती का विवाह कर दिया जायगा तो लीलावती विधवा नहीं हो सकेगी। उन्होंने कटोरे में छेद ऐसा कराया था कि वह ठीक समय पर ही डूबता।

जब विवाह का समय हुआ और वर-कन्या विवाह के मंडप में आ बैठे, तब वह कटोरा जल के ऊपर छोड़ दिया गया। लीलावती के पिता बड़ी उत्सुकता से उस कटोरे को देखने लगे। वह यह भी जान चुके थे कि यदि लीलावती के ब्याह की यह घड़ी चूक जायगी तो जिन्दगी भर उसका विवाह नहीं हो सकता।

दो घण्टा बीत गया, पर कटोरा पानी में न डूबा। लीलावती के पिता घबड़ा गये। उन्होंने ध्यान से कटोरे को देखा। उसे देखते ही वह सिर पटक-पटक कर रोने लगे। बात यह थी कि जिस समय लीलावती मंडप में लायी जा रही थी, उसी समय उसके गहने की मोतियों की माला का एक मोती टूट कर कटोरे में ठीक छेद के ऊपर आ

गिरा था। इससे कटोरे में पानी उतना न जा सका, जितने से समय पर कटोरा डूब जाता।

इस प्रकार विवाह समय बीत गया। लीलावती के पिता ने विवाह कार्य बन्द कर दिया। क्योंकि वह जानते थे कि यदि अब विवाह तो लीलावती का पति मर जायगा। वर अपने घर वापस चला गया।

लीलावती भी अपने पिता को दुखी देखकर बहुत दुःखी हुई अपने पिता के पास जाकर बोली—पिता जी! आप दुखी क्यों होते हैं?

पिता ने कहा—बेटी! यत्न करने पर भी समय हाथ से निकल गया। अब तेरा विवाह नहीं हो सकेगा।

लीलावती ने शांति के साथ कहा,—इसके लिए चिन्ता न कीजिये यदि मैं चली जाती तो आपकी सेवा कौन करता? मुझे तो आपकी सेवा करने में ही सुख है, आप चिन्ता न करें।

पिता ने कहा,—तेरा कहना सच है बेटी! परन्तु मेरे कोई पुत्र तो नहीं है। मेरे मरने के बाद ही मेरे वंश का अन्त हो जायगा।

लीलावती ने कहा,—आप धीरज धरें। मैं ऐसा काम करूँगी कि आपका नाम संसार में सदा अमर रहेगा।

इसके कुछ ही दिनों के बाद लीलावती देवी ने एक अपूर्व ग्रन्थ की रचना करके अपने पिता के सामने रख दिया। उस पुस्तक को देखकर देवी के पिता आनन्द से विह्वल हो उठे और बोले,—बेटी! सचमुच तुमने मेरा नाम अमर कर दिया।

आज भी गणित और एलजब्रा की कोई पुस्तक लीलावती की बनायी हुई पुस्तक से बढ़कर नहीं मानी जाती। लीलावती का यह ग्रन्थ ... में लिखा गया है, जिसे देखकर गणित के बड़े-बड़े विद्वान् ... जाते हैं। धन्य हैं भारत की विदुषी देवियां!

सत्य सब से बड़ा है

सुधन्वा और विरोचन की कथा

नहीं असत्य सम पातक पुञ्जा।
गिरि सम होहिं कि कोटिक गुञ्जा ॥

एक समय केशिनी नामक कन्या का स्वयंवर हुआ। उसमें प्रह्लाद के पुत्र विरोचन और सुधन्वा नाम के दोनों ब्राह्मण गये। सभा में बहुत से राजा तथा अन्यान्य बड़े-बड़े लोग बैठे थे। [illegible]में गुणवती कन्या केशिनी ने सब छोड़कर सुधन्वा को पसन्द किया। [illegible] बात विरोचन से देखी न गयी। वह बोला—सुन्दरी ! यह ब्राह्मण [illegible]भुक है। इससे विवाह करने को तू क्यों तैयार है ? इससे तुझे बहुत [illegible]मिलेगा। अच्छा हो कि तू मुझसे विवाह कर ले। मैं धन, कुल, जाति [illegible]र मान-मर्यादा में सब प्रकार इस ब्राह्मण-बालक से बड़ा-चढ़ा हूँ।

यह सुनकर केशिनी ने कहा,—जो दूसरे को छोटा कहकर आप [illegible] बनना चाहता है, वह कदापि बड़ा नहीं हो सकता। अच्छा हो, [illegible]दि यह निश्चय किसी तीसरे से कराया जाय कि आप दोनों में कौन [illegible] है।

विरोचन ने कहा,—और इसके लिए हम दोनों अपने प्राणों की [illegible] लगावें। जो हारे, वह अपना प्राण त्याग दे।

सुधन्वा ने कहा,—और किसी से न पूछकर मैं तुम्हारे पिता प्रह्लाद [illegible] से इसका निर्णय कराऊँगा। मुझे विश्वास है, वह पुत्र को बचाने के [illegible] भी कभी झूठ नहीं बोलेंगे।—विरोचन ने इस बात को मान लिया [illegible]र दोनों प्रह्लाद के पास गये।

राजा प्रह्लाद ने सुधन्वा को देखते ही उठकर उसका स्वागत किया। [illegible]र आने का कारण पूछा।

सुधन्वा ने कहा,—आपके पुत्र विरोचन में और मुझमें प्राण की बाजी लगी है। मैं अपने को बड़ा कहता हूँ और वह अपने को। निर्णय का भार आप पर है।

यह सुनकर राजा प्रह्लाद बड़े संकट में पड़े। उनके एक ही पुत्र था। यदि वह पुत्र का मोह करते हैं तो उन्हें झूठ बोलना पड़ता है, और यदि सच बोलते हैं तो पुत्र से हाथ धोना पड़ता है। प्रह्लाद कुछ देर तक चुप रहे। अन्त में उन्होंने निर्णय किया कि पुत्र की जान भले ही चली जाय, पर मैं असत्य कभी न बोलूँगा। उन्होंने अपने पुत्र से कहा,—सुनो बेटा! सुधन्वा के पिता अंगिरा मुझ से और उनकी माता तुम्हारी माता से श्रेष्ठ हैं। इसलिए सुधन्वा तुझ से बड़े हैं।

प्रह्लाद का यह निर्णय सुनकर सुधन्वा ने कहा,—हे राजन्! संसार में पुत्र से बढ़कर पिता के लिए प्यारी कोई वस्तु नहीं है। ऐसे पुत्र का मोह न करके आपने इस समय सत्य की रक्षा की है। इसलिए मैं आपके पुत्र को जीवन-दान देता हूँ। पर यह चलकर केशिनी के सामने मेरा बड़प्पन स्वीकार करें और आपका निर्णय कह सुनावें। प्रह्लाद ने अपने पुत्र को जाने की आज्ञा दी।

विरोचन ने केशिनी के पास जाकर पिता की आज्ञा से अपने पिता का निर्णय कह सुनाया और सुधन्वा का बड़प्पन भी स्वीकार किया। इतना ही नहीं, उसने सुधन्वा का पैर भी अपने हाथ से धोया।

केशिनी ने विरोचन से कहा,—जिस समय आप अपनी प्रशंसा स्वयं कर रहे थे, उस समय आप छोटे जान पड़ते थे और इस समय ब्राह्मण का पैर धो रहे हैं, इसलिए बिना कहे ही आप बड़े बने हुए हैं। धन्य हैं आपके पिता जिन्होंने पुत्र की ममता छोड़कर सत्य का पालन किया। आप भी धन्य हैं कि पिता की आज्ञा मानकर मेरे सामने [illegible] स्वीकार करने में जरा भी संकुचित नहीं हुए।

परिश्रम से विद्याभ्यास

इन्द्र और भवक्रीत की कथा।

भारद्वाज मुनि के पुत्र का नाम भवक्रीत था। उसने कहा कि बिना पढ़े ही हम सब वेदों के ज्ञाता हो जाय। इसके लिए उसने घोर तपस्या की। तपस्या से इन्द्र प्रसन्न हुए और आकर बोले कि तुम किस लिए तपस्या कर रहे हो? भवक्रीत ने कहा,—महाराज! मैं चाहता हूँ कि मुझे बिना पढ़े ही चारों वेद आ जावें। मैं वेदों का ज्ञान तप के द्वारा ही प्राप्त करना चाहता हूँ। इन्द्र ने कहा,—इस काम के लिए तुम्हारा तपस्या करना ठीक नहीं है। यदि तुम तप के जोर से वेद जान भी जाओगे तो तुम्हारा वह जानना ठीक नहीं होगा। विद्या गुरु से पढ़ने की वस्तु है। पढ़ने की यह राह अच्छी नहीं। तुम जाकर गुरु से वेद पढ़ो और साथ-ही-साथ तप भी करो। इससे तुम्हें बहुत जल्द सब विद्या आ जायगी।

किन्तु इन्द्र के चले जाने पर भी भवक्रीत ने तप करना नहीं छोड़ा। जब कुछ दिन बीत गये, तब इन्द्र फिर आये। उन्होंने फिर भी उसे बहुत समझाया। कहा कि तुम अपने पिता से ही वेद पढ़ो। भवक्रीत ने कहा कि मैं तो पहले ही अपना निश्चय सुना चुका हूँ कि मैं वेद पढ़ना नहीं चाहता और तप के बल से उनका ज्ञान प्राप्त करना चाहता हूँ। इसके लिए मैं अपना प्राण तक दे देने का निश्चय कर चुका हूँ।

जब इन्द्र ने यह हठ देखा, तब उन्होंने दूसरे प्रकार से काम करना शुरू किया। एक दिन इन्द्र ब्राह्मण के वेश में गङ्गातट पर, जहाँ स्नान करने के लिए गये, जहाँ भवक्रीत स्नान करने थे। जब वह घाट पर पहुँचे तब इन्द्र मुट्ठी भर बालू लेकर जल्दी-जल्दी गङ्गा में फेंकने लगे। भवक्रीत ने बड़े आश्चर्य से उस ब्राह्मण की ओर देखा। किन्तु इन्द्र

हाँ पर एक वायसराय रहता था*। जिसे बड़े लाट भी कहते हैं। वह हिन्दुस्तान की राजधानी दिल्ली में रहता था। सल्तनत का काम सुविधा से होने के लिये वायसराय के नीचे कई गवर्नर थे। हिन्दुस्तान में कई प्रान्त हैं और एक-एक प्रान्त का मालिक गवर्नर या छोटा लाट कहलाता था। एक प्रान्त में कई कमिश्नरियाँ होती हैं। कमिश्नरी के सबसे बड़े हाकिम को कमिश्नर कहते हैं। एक कमिश्नरी में कई जिले होते हैं और जिले के आला हाकिम को कलेक्टर कहते हैं। एक जिले में कई परगने होते हैं और परगने के हाकिम को हाकिम-परगना या डिप्टी-कलेक्टर कहते हैं। परगने के नीचे तहसील होती है और उसके अधिकारी को तहसीलदार कहते हैं। इसी प्रकार तहसीलदार के नीचे कानूनगो और उसके नीचे पटवारी होता है जो कि एक गाँव की जमीन का काम देखता है।

पुलिस मुहकमे में जिले का सबसे बड़ा हाकिम पुलिस सुपरिंटेंडेंट कहलाता है। उसके नीचे इन्स्पेक्टर और इन्स्पेक्टर के नीचे कई सब इन्स्पेक्टर या दारोगा होते हैं। एक दारोगा के जिम्मे कई गाँव होते हैं। हर गाँव की निगरानी करने के लिए चौकीदार होता है।

राज्य में दो विभाग मुख्य हैं, एक न्याय विभाग और दूसरा शासन विभाग। कलेक्टर शासन विभाग में जिले का सबसे बड़ा

---

* नोट—अब हमारा देश स्वतंत्र है। अब दिल्ली के बड़े लाट को राष्ट्रपति कहते हैं, प्रान्तों के लाट को, राजपाल, प्रधान मन्त्रियों को मुख्य मन्त्री। हमारे देश के कायदे कानून बदल गये। सारे देशी राज्य भी इसमें मिलगये हैं,। जमींदारी भी सरकार के हाथ में आगयी है। दिनोंदिन बहुत सी बातें जब से अंग्रेज यहाँ से चले गये हैं, बदलती जारही हैं, हमारे देश में इस समय सबसे बड़े नेता पं० जवाहरलाल नेहरू हैं। वह स्वतन्त्रता की गाड़ी को बड़ी योग्यता से चला रहे हैं। भारत के वे प्रधान मंत्री जी हैं।

समझ में नहीं आता कि यह ब्राह्मण क्या इतना परिश्रम कर रहा है। अन्त में उन्होंने उस ब्राह्मण से ऐसा करने का कारण पूछा।

इन्द्र ने कहा कि मैं इस प्रकार बालू फेंक कर पुल बाँध देना चाह[ता] हूँ। क्योंकि आर-पार होने में मनुष्यों को बड़ा ही कष्ट होता है। भवक्रीत ने कहा यह आपका असाध्य साधन है। इस प्रकार बा[लू] फेंकने से पुल नहीं बन सकता।

इन्द्र ने कहा—जिस प्रकार आप बिना पढ़े ही वेद-विद्या पा जा[ना] चाहते हैं, वैसे ही मैं भी बालू फेंक-फेंककर पुल बाँध देना चाह[ता] हूँ। जब आप यह काम कर सकते हैं तो क्या मैं यह काम न[हीं] कर सकता?

अब भवक्रीत ने उस ब्राह्मण को पहचान लिया। कहा, अच्[छा] तो मैं आज से ही यह काम छोड़ देता हूँ। अब जो आप कहें मैं कर[ने] को तैयार हूँ। इन्द्र ने कहा कि जिस काम के लिए जो उद्योग उचि[त] हो, वही करना चाहिये। शक्ति के अनुसार उचित काम करने से ही फल मिल सकता है। किसी काम में जल्दबाजी करना अच्छा नहीं। अब तुम तप छोड़कर परिश्रम के साथ अपने पिता से वेद पढ़ो। भवक्रीत ने इन्द्र के आदेश के अनुसार ऐसा ही किया और थोड़े ही दिनों में वह बहुत बड़े विद्वान् हो गये।

राजकीय ज्ञान

यह सिख मानि लेहु तुम भाई।
राजनीति बिनु धर्म नसाई॥

भारतवर्ष के भूतपूर्व बादशाह का नाम पञ्चमजार्ज था। अ[ब] स्वतंत्र देश के राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद हैं। यह इङ्गलैण्ड [...] ने थे। उनकी ओर से राज्य का सब काम देखने के लि[ए]

यहाँ पर एक वायसराय रहता था*। जिसे बड़े लाट भी कहते हैं। वह हिन्दुस्तान की राजधानी दिल्ली में रहता था। हिन्दुस्तान का काम सुविधा से होने के लिये वायसराय के नीचे कई गवर्नर थे। हिन्दुस्तान में कई प्रान्त हैं और एक-एक प्रान्त का मालिक गवर्नर या छोटा लाट कहलाता था। एक प्रान्त में कई कमिश्नरियाँ होती हैं। कमिश्नरी के सबसे बड़े हाकिम को कमिश्नर कहते हैं। एक कमिश्नरी में कई जिले होते हैं और जिले के आला हाकिम को कलेक्टर कहते हैं। एक जिले में कई परगने होते हैं और परगने के हाकिम को हाकिम-परगना या डिप्टी-कलेक्टर कहते हैं। परगने के नीचे तहसील होती है और उसके अधिकारी को तहसीलदार कहते हैं। इसी प्रकार तहसीलदार के नीचे कानूनगो और उसके नीचे पटवारी होता है जो कि एक गाँव की जमीन का काम देखता है।

पुलिस मुहकमे में जिले का सबसे बड़ा हाकिम पुलिस सुपरिंटेंडेंट कहलाता है। उसके नीचे इन्सपेक्टर और इन्सपेक्टर के नीचे कई सब इन्सपेक्टर या दारोगा होते हैं। एक दारोगा के जिम्मे कई गाँव होते हैं। हर गाँव की निगरानी करने के लिए चौकीदार होता है।

राज्य में दो विभाग मुख्य हैं, एक न्याय विभाग और दूसरा शासन विभाग। कलेक्टर शासन विभाग में जिले का सबसे बड़ा

* नोट—अब हमारा देश स्वतंत्र है। अब दिल्ली के बड़े लाट को राष्ट्रपति कहते हैं, प्रान्तों के लाट को, राजपाल, प्रधान मन्त्रियों को मुख्य मंत्री। हमारे देश के कायदे कानून बदल गये। सारे देशी राज्य भी इसमें मिलगये हैं,। महाराजाओं की सरकार के हाथ में आगयी है। दिनोंदिन बहुत सी बातें जब से अंग्रेज यहाँ से चले गये हैं, बदलती जारही हैं, हमारे देश में इस समय सबसे बड़े नेता प० जवाहरलाल नेहरू हैं। वह स्वतन्त्रता की गाड़ी को बड़ी योग्यता से चला रहे हैं। भारत के वे प्रधान मंत्री भी हैं।

अफसर है। न्याय विभाग में जिले के सबसे बड़े हाकिम को ज
कहते हैं।

शहर का प्रबन्ध करने के लिए प्रत्येक शहर में म्युनिसपलबोर्ड होता
है। इसमें शहर में रहनेवालों के चुने हुए मेम्बर होते हैं। इसके जिम्मे
शहर की सड़कों की मरम्मत करना, शहर की सफाई करना, शहर में
पानी और रोशनी का प्रबन्ध करना आदि रहता है। जिले का प्रबन्ध
करने के लिए प्रत्येक जिले में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड या जिला बोर्ड होता है।
इसमें गाँव के रहनेवालों के चुने हुए मेम्बर होते हैं। जिलाबोर्ड देहात
की सड़कों, स्कूलों तथा नदी के घाट आदि का प्रबन्ध करता है।

सरकार ने दूर-दूर खबर भेजने के लिए डाकघर और तारघर का
प्रबन्ध किया है। गुप्त समाचार लिफाफे में बन्द करके भेजा जाता है
और मामूली समाचार पोस्टकार्ड पर। जहाँ चिट्ठी छोड़ी जाती है, उसे
लेटर बाक्स (पत्र-बक्स) कहते हैं। घर-घर चिट्ठी पहुंचानेवाले को पोस्टमैन
या चिट्ठीरसा अथवा डाकिया कहते हैं। चिट्ठी रजिस्टरी से भी भेजी
जाती है। इसके पहुंचने में किसी तरह का खटका नहीं रहता। डाक-
खाने को पोस्टआफिस कहते हैं। इसमें काम करनेवाले सबसे बड़े
कर्मचारी को डाकमुंशी या पोस्टमास्टर कहते हैं। यदि कोई समाचार
जल्द भेजने की आवश्यकता होती है तो वह तार के द्वारा भेजा जाता
है। इसमें पैसा अधिक लगता है। अब तार हिन्दी में भी जा सकते हैं।

भूले-भटके आदमी को पुलिस में अथवा सेवा-समिति के दफ्तर में
पहुंचा देना चाहिये। यदि कोई आदमी दुष्टता करता हो, कोई चीज
चुराने की चेष्टा करता हो, भुलावा देकर कहीं ले जाना चाहता हो तो
फौरन नजदीक के पुलिस सिपाही को खबर दे देनी चाहिये।

मेले-तमाशे में लड़कियों को नहीं जाना चाहिये। यदि जाओ तो
...लों का साथ न छोड़ो। यदि अचानक साथ छूट जाय तो किसी
... आदमी के कहने से उसके साथ कहीं न जाओ, बल्कि सेवा-

समिति के दफ्तर में अथवा पुलिस के दफ्तर में जाकर अपना और अपने पिता अथवा घर में जो कोई बड़ा हो, उसका नाम तथा गाँव का नाम, थाना, पोस्टआफिस और जिला बतला दो। इससे कोई डर नहीं रहेगा और तुम बेखटके अपने घर पहुंच जाओगी।

हमारा धर्म

तुलसी पंछिन के पिये, घटै न सरिता-नीर।
धर्म किये धन ना घटै, जो सहाय रघुवीर॥
धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपतिकाल परिखिये चारी॥

हमारा धर्म आर्य-धर्म है। लड़कियों को सदा अपने धर्म का खयाल रखना चाहिये। यदि कभी आफत का समय आ जाय और दूसरा धर्म ग्रहण करने के लिये मजबूर होना पड़े, तब भी तुम अपने धर्म को न छोड़ो। देखो, पुराने जमाने में हमारी माताओं और बहनों ने अपना धर्म रखने के लिए प्राण तक दे दिया है। वही भाव तुम्हारे दिल में भी होना चाहिये। अपने धर्म को छोड़कर दूसरा धर्म ग्रहण करना बहुत बड़ा पाप है। दूसरी बात यह भी है कि आर्य-धर्म में जो विशेषता है, वह संसार के किसी धर्ममें नहीं है। आर्यधर्म संसार में सबसे पुराना भी है।

हमेशा गरीबों पर दया करो। जहाँ तक हो सके अपने खर्च में से कुछ बचाकर गरीबों की सहायता किया करो। नीच (अछूत) जाति के हिन्दुओं से प्रेम के साथ मिलो। छोटी जातिवाली बहनों से ऐसा कोई बर्त्ताव न करो, जिससे उनके दिल में अपने छोटेपन के कारण

दुःख हो। छोटा और बड़ा होना यह सब दुनियादारी है। असल में कोई छोटा और बड़ा नहीं है। क्योंकि हम सब एक ही परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं, फिर उसमें छोटा-बड़ा कैसा? मान लो तुम चार बहनें हो। अब उनमें कोई छोटी और कोई बड़ी कैसे? हाँ अवस्था में बड़ी छोटी का होना दूसरी बात है। बड़ी वही है, जिसमें गुण हों और छोटी वह है, जिसमें गुण न हों अथवा दुर्गुण हों।

यदि लड़कियों में समझ पैदा हो जाय तो उन्हें अपने धर्म की पुस्तकें अवश्य पढ़नी चाहिएं। क्योंकि अपने धर्म का जानना प्रत्येक मनुष्य के लिए बहुत जरूरी है।

आर्य धर्म की प्रधान विशेषताएँ ये हैं :—

गरीबों पर दया करना। दीन-दुखियों के दुःख में शामिल होना और यथाशक्ति उनकी सेवा करना। सदा परोपकार करना। माँस मछली न खाना। शराब न पीना। किसी जीव की हिंसा न करना। पवित्रता से रहना। हर समय ईश्वर का स्मरण रखना। हर तरह के पापों से बचना। किसी का दिल न दुखाना आदि।

हमारा देश

जयति जयति हिन्द देश, जय स्वतंत्र जय स्वदेश।

हमारे देश का नाम भारतवर्ष है। प्रत्येक लड़की को अपने ... की ममता रखनी चाहिए। यह देश संसार में अनूठा ... यहाँ की भूमि बहुत उपजाऊ है और हर तरह की ... है। यहाँ हर साल इतना अन्न पैदा होता था कि ... का भी पेट भरता था। यहाँ कलकत्ता, बम्बई ... सबसे बड़े शहर हैं।

करने को तैयार हूँ। यदि मैं इस समय इस बच्चे को देखती हूँ बारूद भींगकर नष्ट हो जायगा। इसका फल यह होगा कि हम देशवाले दुश्मन का मुकाबला करने से लाचार हो जायँगे और मु पर दुश्मनों का कब्जा हो जायगा। इस प्रकार एक बच्चे की ज बचाने से देश के बहुत से नवजवान बच्चे लड़ाई में मारे जायँगे।

देखा लड़कियों, इसे कहते हैं देश-प्रेम। उस वीर स्त्री ने अपने की ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया था और देश की स्वतन्त्रता हृदय से लगाया था। इसी प्रकार का भाव अपने देश भारतवर्ष लिए तुममें भी होना चाहिये।

> जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
> वह नर नहीं नर-पशु निरा है और मृतक समान है॥

व्यायाम या कसरत

नाम करना हो वो तुम उपकार करके देखलो।
स्वस्थ रहना हो तो तुम व्यायाम करके देख लो॥

यह पहले ही कहा जा चुका है कि कन्याओं के लिए व्यायाम उतना ही जरूरी है, जितना लड़कों के लिए। अब यहाँ कन्याओं के करने योग्य दो-चार तरह की कसरतें बतलायी जायँगी।

ताड़ासन

सीधी खड़ी हो जाओ। दोनों पैरों की एड़ियों और पंजों को मिल रखो। शरीर तना रहे। दोनों हाथों को खूब तनाव के साथ ऊपर । ऐसा प्रतीत हो मानों ऊपर किसी चीज को तुम पकड़ रही हो। किन्तु पैर की एड़ी उठने न पावे। इस प्रकार कम से कम

तीन मिनट तक रहो। बाद धीरे-धीरे पूरी ताकत लगाकर दोनों
थों को कन्धे पर लाओ और फिर उन्हें कन्धे की सीध में दोनों ओर
लाओ। फिर उन्हें समेटकर कन्धे के पास लाओ और सामने की
र ले जाओ। इसी प्रकार बारी-बारी से एक हाथ को ऊपर रखकर
हाथ से कसरत करो तीन-चार बार ऐसा करने में ही पूरी मिहनत
जायगी।

इस प्रकार प्रतिदिन के अभ्यास से शरीर गठीला हो जाता है और
में कोई विकार नहीं पैदा होता। इसके अलावा इससे शरीर में
ताकत भी आ जाती है।

इसी तरह पैरों की एड़ियों को ऊपर उठाकर पंजों के बल पर पूरे
व के साथ कुछ देर तक खड़ी रहो। इससे पैरों में पूरा जोर आता
यह उपाय बहुत ही सरल है और इसके करने के लिए कोई चीज
ने की जरूरत नहीं है।

डम्बल की कसरत

उसी प्रकार सीधी खड़ी रहो जैसे ताड़ासन में थीं, पर इसमें पैर
अँगूठों में ६-७ इञ्च का अन्तर रहे। दोनों कुहनियों को बगल से
गाओ। डम्बल को खड़े पकड़ कर कुहनियों को सीध में सामने की
र रख दो। फिर डम्बल को डमरू की भांति हिलाओ। कलाई के
वा और कोई अङ्ग न हिलने पावे। शुरू-शुरू में कम-से-कम दस
र किया करो।

अब दोनों हाथों को सीध में फैला दो। शरीर सीधा रहे। डम्बल
खड़ा पकड़े रहो, आड़े न रहो। अब उन्हें धीरे-धीरे और बलपूर्वक
न बार हिलाओ। बाद हाथों को सिर की सम रेखा में ऊपर ले जाओ
र पूर्ववत् दस बार हिलाओ। पैरों को फैला दो। फिर तने हुए हाथों

ताश न हो जाओ। प्रतिदिन नियमित रूप से इसका अभ्यास करती
ो। कुछ ही दिनों के अभ्यास से पैर के अँगूठे पकड़ने लग जाओगी।
इस बात का हमेशा ध्यान रहे कि पेट की शुद्धि करने के बाद ही
ायाम करना चाहिये—चाहे व्यायाम कोई भी हो। ठूँस-ठूँस कर
ा लेने अथवा थोड़ा खा लेने के बाद व्यायाम करना ठीक नहीं।

व्यायाम कर चुकने के बाद थोड़ी देर तक विश्राम करना आवश्यक
। विश्राम करने का यह मतलब नहीं है कि सो जाना चाहिए, बल्कि
श्राम करने का यह अर्थ है कि कुछ देरतक ठण्डी हवा में बैठकर या
हलकर आराम करना चाहिये। क्योंकि व्यायाम करने के बाद शरीर
ी नस-नाड़ियाँ बहुत तेज हो जाती हैं, विश्राम देकर उन्हें फिर साधा-
ण गति में आजाने देना उचित है।

जब तक शरीर की सब नाड़ियाँ अपने असली रूप में न हो जाय,
ब तक कोई चीज न खाओ। बाद जो जी में आवे, वह खा सकती
ो। व्यायाम के बाद १५-२० मिनट तक विश्राम करने से सब ठीक
ो जाता है।

बेटियो! हमेशा व्यायाम करो। देखो, एक स्त्री ताराबाई भी थीं जो
मोटर रोक लेतीं थीं, हाथी को सीने पर चढ़ा लेती थीं, माल से भरी हुई
बैलगाड़ी उनकी छाती के ऊपर से चली जाती थी। क्या तुममें इतनी
शक्ति नहीं आ सकती। अवश्य आ सकती है, पर संयम से रहो और
व्यायाम करो। क्या तुम्हें रामायण की कथा याद है? यदि नहीं, तो
तुम इसे एक बार जरूर पढ़ो। देखोगी कि एक बार देवासुर-संग्राम में
महाराज दशरथ के साथ उनकी पत्नी महारानी कैकेयी भी गयी थीं,
संयोग की बात है कि युद्ध के मैदान में महाराज दशरथ के रथ का
धुरा टूट गया। उसे देखते ही वीर क्षत्राणी कैकेयी फौरन रथ से कूद
पड़ीं और अपने हाथ की कलाई पर रथ के पहिये का भार ले लिया।
जब लड़ाई समाप्त हो गयी, तब महाराज दशरथ ने अपनी पत्नी को

इस वीरता-पूर्ण कार्य-कुशलता का परिचय मिला। सोचो तो सह
कैकेयी आजकल की स्त्रियों की तरह होतीं तो परिणाम कितना
होता! क्या उस दशा में महाराज दशरथ शत्रुओं के हाथ से
जाते और कैकेयी पर संकटों का पहाड़ न टूट पड़ता? किन्तु
बलवती थीं, इसलिए उन्होंने अपनी वीरता से आफत के समय
पति को बाल-बाल बचा लिया। बस-इसी प्रकार की शक्ति तु
पैदा करनी चाहिये।

चिट्ठी पत्री

वारि विलोचन बाँचत पाती। पुलकि गात आयी भरि छ

पत्र में हमेशा कोमल शब्दों का व्यवहार करना चाहिए
किसी पर चित्त नाराज हो तो भी मीठे शब्दों का ही
करना उचित है। ऐसे पत्र से शत्रु के दिल में भी दर्द पैदा हं
है। किन्तु कड़े शब्दों में पत्र लिखने से कोई लाभ नहीं होता,
तो पत्र पढ़नेवाले के दिल में और द्वेष पैदा होता है।
पत्र लिखने की दो रीतियाँ हैं। एक तो पुराने ढङ्ग से पत्र लिख
है और दूसरा नये ढङ्ग से। यद्यपि अब पुराने ढङ्ग से पत्र लिख
लिखे लोगों में आदर की दृष्टि से नहीं देखा जाता, फिर भी
दोनों रीतियाँ नीचे दिखलायी जाती हैं। इनसे तुम्हें हर तरह
लिखना आ जायगा।

पुरानी शैली

बड़े को 'सिद्धिश्री' और छोटे को 'स्वस्तिश्री' लिखने की री
सबसे ऊपर 'ॐ' 'राम' अथवा 'श्री' मङ्गलसूचक शब्द लि
जरूरी है।

यदि तुम्हें अपनी बड़ी बहन के पास पत्र भेजना हो तो इस ढङ्ग लिखो:—

ॐ

सिद्धिश्री सर्वोत्तमोपमार्हा प्यारी बहन श्रीमती यशोदादेवी को खा काशी से शशिप्रभा का कोटिशः प्रणाम। दोनों ओर की कुशल मात्मा से चाहती हूँ, जिसमें आनन्द है। बहन, इधर बहुत दिनों तुम्हारा कोई पत्र नहीं आया, इससे हम लोगों का चित्त लगा हुआ। जीजाजी को मेरा प्रणाम कहना। सब बच्चों को प्यार। पत्र का तर जल्द देना। आज मिति भादव सुदी १४ शनिवार स० १९९१

यदि पिता को लिखना हो तो इस तरह लिखो.—

सिद्धिश्री सर्वोत्तमोपमार्ह श्रद्धेय बाबूजी को लिखा प्रयाग से देवलता कोटिशः प्रणाम।

अस्तु। किसी स्त्री को पत्र लिखने में 'सर्वोत्तमोपमार्हा' लिखो और ष को पत्र लिखने में 'सर्वोत्तमोपमार्ह' लिखो। इसी रीति से छोटे भी पत्र लिखना चाहिये। छोटे को पत्र लिखने में केवल प्रारम्भ 'सिद्धिश्री' की जगह 'स्वस्तिश्री' लिखा जायगा। और सब बातें ज्यों त्यों रहेंगी। पत्र लिखने में इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि शब्दों में सब बातें आ जानी चाहिये।

नयी शैली

भाई को पत्र:— ता० २२ सितम्बर १९३४
७।१ हरप्रसाद दे लेन, कलकत्ता

य भैया,

सादर प्रणाम। आपका पत्र आया। माँ को भी पढ़कर सुना दिया।

आप बहुत जल्द आनेवाले हैं, यह पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। यदि अवसर मिले तो मेरे लायक कोई पुस्तक अवश्य लेते आइयेगा। बस और कुछ मैं नहीं चाहती।

आपकी छोटी बहन—
उर्मिला।

सखी को पत्रः—

ता० १४-६-३४
जौनपुर

प्यारी सखी रामकली,

तुम्हारा पत्र मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। यह जानकर बहुत दुख हुआ कि वहाँ तुम्हारे पढ़ने-लिखने का कोई प्रबन्ध नहीं है। इसलिए अब मैं तुम्हें अपने हर पत्र में कुछ-न-कुछ नयी बातें बराबर लिखती रहूँगी। उनमें जो बात याद करने के लायक रहा करे, उसे तुम याद कर लिया करना। अच्छा देखो मैं कुछ बातें नीचे लिखती हूँ:—

हिन्दुस्तानी महीनों के नाम

चैत (चैत्र), बैशाख, जेठ (ज्येष्ठ), असाढ़ (आषाढ़), सावन (श्रावण), भादव (भाद्रपद), कुआर (आश्विन), कातिक (कार्तिक), अगहन (मार्गशीर्ष), पूस (पौष), माघ, फागुन (फाल्गुन)।

साल भर में ये बारह महीने होते हैं। हर महीने में दो पक्ष या पाख होते हैं। एक को कृष्णपक्ष और दूसरे को शुक्लपक्ष कहते हैं। एक ... ३० दिन का होता है। किसी-किसी महीने में तिथि घटा-बढ़ा करती है।

जो ( ) इस चिन्ह के भीतर शब्द लिखे गये हैं, वे उन

शब्द के शुद्ध रूप हैं, जैसे चेत का शुद्ध रूप है चैत्र। ( ) चिन्ह को कोष्ठ कहते हैं।

दिनों के नाम

रविवार, सोमवार, मङ्गलवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार और शनिवार। इन सात दिनों को हफ्ता कहते हैं। किसी भी दिन से लेकर सात दिन को हफ्ता कहा जाता है।

चार दिशाएँ हैं और चार ही कोण हैं

उत्तर, दक्खिन, पूरब, पश्चिम ये चार दिशाए हैं। ईशान, नैऋत्य, वायव्य और आग्नेय ये चार कोण हैं। उत्तर और पूरब के बीच के कोण को ईशान, दक्खिन और पश्चिम के बीच के कोण को नैऋत्य, उत्तर और पश्चिम के कोण को वायव्य तथा पूरब और दक्खिन के कोण को आग्नेय कोण कहते हैं।

अंग्रेजी महीनों के नाम

जनवरी,	फरवरी,	मार्च,	अप्रैल,	मई,	जून,
३१	२८ या २९	३१	३०	३१	३०
जुलाई,	अगस्त,	सितम्बर,	अक्टूबर,	नवम्बर,	दिसम्बर
३१	३१	३०	३१	३०	३१

जिस महीने के नीचे जो अ[illegible] है, वह महीना उतने दिन का होता है। अंग्रेजी [illegible] गते। फरवरी को छोड़- [illegible] हैं। केवल फरवरी का [illegible] में चार का पूरा भाग [illegible] होती है और जिस [illegible] २८ दिन की

बस आज यहीं तक। अपना कुशल-समाचार बराबर देती रहना। परीक्षा करीब है, इसलिए शायद उत्तर देने में मुझे दो-चार दिन की देर लगा करेगी। इसका कोई रञ्ज न मानना।

तुम्हारी सखी—
कमला।

यदि कोई पुस्तक या और कोई चीज मँगानी हो, तो उस कार्यालय को इस प्रकार पत्र लिखना चाहिये:—

सेवा में—

मैनेजर, काशी-पुस्तक-भण्डार,
काशी

महोदय,

मैने 'प्रताप' नाम के साप्ताहिक पत्र में 'नारी-धर्म-शिक्षा' और 'कन्या-शिक्षा-दर्पण' का विज्ञापन देखा है। इसलिए कृपा करके आप दोनों पुस्तकें वी० पी० द्वारा नीचे लिखे पते पर शीघ्र भेजने की कृपा करें—साथ ही अपने कार्यालय का बड़ा सूचीपत्र भी भेज दें।

ता० २५–२–३५
नं० ४१ अपर चितपुर रोड,
कलकत्ता

निवेदिका—
सीतादेवी
धर्मपत्नी, ठा० वीरेन्द्रसिंह एम० ए०

लिफाफे पर पता लिखने की रीति :—

सबसे ऊपर पानेवाले का नाम लिखो। उसके नीचे बायीं ओर कुछ जगह छोड़कर यदि मार्फत लिखना हो तो मार्फत लिखो, नहीं तो ... और मकान का नम्बर अथवा गाँव लिखो। उसके नीचे दाहिनी ओर थोड़ी जगह छोड़कर पोस्ट आफिस का नाम लिखो और सबसे नीचे जिले का नाम लिखो। जैसे :—

तो समाचार और लकीर के बाहर दाहिनी ओर पता लिखा जाता
नीचे पोस्टकार्ड के चित्र में देखकर समझ लो :—

उदाहरण नं० ३ (पोस्टकार्ड)

इस ओर समाचार रहे—		
यहाँ सब प्रसन्न हैं नित्य प्रति भगवान की प्रार्थना से आनन्द होता है। आपकी— उमा देवी।	पावें शारदा देवी c/o पं० श्रीधरमिश्र, मो० वासलीगंज, पो० औराई, जि० मिर्जापुर।	टि ३ पै

उदाहरण नं० ४ (पोस्टकार्ड)

इधर समाचार इस प्रकार हो		
यहाँ सब प्रसन्न हैं वहाँ का कुशल चाहिये। आपकी— शन्नो देवी।	सेवा में— श्रीमती यशोदा देवी प्रधानाध्यापिका कन्या-विद्यालय, मथुरा।	टि ३ पै

जिसके नाम से पत्र भेजो, उसका नाम यदि प्रसिद्ध न हो तो के किसी ऐसे आदमी का नाम मार्फत या c/o में लिख दो जिसके का पता लगाने में पोस्टमैन को दिक्कत न पड़े और जिसके पास पहुंचने पर पानेवाले को आसानी से मिल जाय।

C/o इसका नाम है 'केयर आफ।' यह अंग्रेजी शब्द है। न लिखकर यदि तुम चाहो तो उसकी जगह c/o भी लिख सकती

पता बहुत साफ लिखना चाहिये। यदि पता साफ नहीं रहता

शीघ्र और सफाई से करने की आदत डालो कि उस काम को कोई भ
लड़की तुमसे शीघ्र और सफाई से पूरा न कर सके।

२१

अपना एक मिनट का समय भी बेकार नष्ट न करो। जिस सम
कोई काम न रहे, उस समय शिक्षाप्रद पुस्तकें पढ़ा करो। पुस्तकों
अपनी सहेली बना लो। फालतू समय में उसी के साथ खेलो, हँ
और बातें करो। हर हालत में वह तुम्हें कुछ न कुछ लाभ पहुंचावेगी

२२

प्रत्येक काम का इतना सोच-समझकर किया करो कि किसी
टोकने का मौका न मिले।

२३

बड़ों की बातों का हृदय से आदर करो। बड़े लोग जो कुछ कहे
तुम्हारे लाभ के ही लिए।

कुछ पहेलियाँ

१—देखी एक अनोखी रानी। नीचे से वह पीवे पानी॥ (दीपक)

२—आहा, आहा, आहा ! छः पैर दो बाँहा।
पीठ के ऊपर पूँछ नाचे, यह तमाशा कहाँ॥ (तराजू)

३—काली काली चीन्ह के भीतर सुन्दर ज्ञान भरा है।
जो वाको पहचाने जाने वह जग से उबरा है॥ (अक्षर)

...प से एक आई चिड़िया।
अन्न खाय पानी से किरिया॥ (घुन)

शीघ्र और सफाई से करने की आदत डालो कि उस काम को लड़की तुमसे शीघ्र और सफाई से पूरा न कर सके।

२१

अपना एक मिनट का समय भी बेकार नष्ट न करो। कोई काम न रहे, उस समय शिक्षाप्रद पुस्तकें पढ़ा करो अपनी सहेली बना लो। फालतू समय में उसी के सा और बातें करो। हर हालत में वह तुम्हें कुछ न कुछ ल

२२

प्रत्येक काम को इतना सोच-समझकर किया व टोकने का मौका न मिले।

२३

बड़ों की बातों का हृदय से आदर करो। य तुम्हारे लाभ के ही लिए।

कुछ पहेलियाँ

१—देखी एक अनोखी रानी। नीचे से वह

२—आहा, आहा, आहा ! छः पैर
पीठ के ऊपर पूँछ नाचे, यह न

३—काली काली चीन्ह के भीतर सुन्द
जो वाको पहचाने जाने वह

४—पूरब से ग
अन्न

११—खोदा पहाड़ निकली चुहिया।—अधिक मिहनत का थोड़ा फल।
१२—चोर की दाढ़ी में तिनका।—दोषी बिना पूछे ही सब कह बैठता है।
१३—छछूँदर के सिर पर चमेली का तेल।—अयोग्य को अच्छी चीज देना।
१४—जिसकी लाठी उसकी भैंस।—जबर्दस्त का सब कुछ है।
१५—जैसा देश, वैसा भेस।—जैसा देश हो वैसा ही ढंग बनाना।
१६—पाँचों अँगुलियाँ घी में।—सब प्रकार लाभ ही लाभ।
१७—डेढ़ बकाइन मियाँ बाग तले।—हँसी के चुटकुले में इसका अ[illegible] मालूम हो[illegible]

नीति के उपदेश

नीच चंग सम जानिये, सुनि लखि तुलसीदास।
ढीलि देत भुइँ गिरि परत, खैंचत चढ़त अकास॥

—

यों रहीम यश होत है, उपकारी के संग।
बाटनवाले को लगे, ज्यों मेंहदी को रंग॥

—

खीरा सिर से काटिये, भरिये नमक बनाय।
रहिमन करुवे मुखन को, चहियत यही सजाय॥

—

तुलसी तीन प्रकार तें, हित अनहित पहिचान।
परवश परे, परोसवश, परे मामला जान॥

—

जो तोकूँ काँटा बुवे, ताहि बोउ तू फूल।
तोकूँ फूल के फूल हैं, वाकू है तिरसूल॥

—

कबीर की चेतावनी

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब्ब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करैगा कब्ब॥

—*—

माटी कहै कुम्हार को, तूं क्या रूँदै मोहि।
इक दिन ऐसा होयगा, मैं रूँदूंगी तोहि॥

—६—

आये हैं सो जायँगे, राजा रङ्क फ़कीर।
एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बंधि जात जँजीर।

—१—

(कबीर के उपदेश)

कबिरा आप ठगाइये, और न ठगिये कोय।
आप ठगा सुख होत है, और ठगे दुख होय॥

—❀—

ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै, आपो शीतल होय॥

—❀—

गारी ही सो ऊपजै, कलह कष्ट औ मीच।
हारि चलै सो साधु है, लागि मरै सो नीच॥

—❀—

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पण्डित हुआ न कोय।
एकै अक्षर प्रेम का, पढ़ै सो पण्डित होय॥
जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।
हौं बौरी ढूँढ़न गयो, रही किनारे बैठ॥

———

गिनी भी होती है। किन्तु इसका मूल्य सोने के भाव के अनुसार समय-समय पर घटा-बढ़ा भी करता है।

पैमाने

५ तोला = १ छटांक	८ चावल = १ रत्ती
४ छटाँक = १ पाव	८ रत्ती = १ मासा
२ पाव = आध सेर	१२ मासा = १ तोला
४ पाव या १६ छटाँक = १ सेर	२० तोला = १ पाव
४० सेर = १ मन	८० तोला = १ सेर

१२ इञ्च = १ फुट	२० विस्वांसी = १ विस्वा
३६ इञ्च = १ गज	२० विस्वा = १ बीघा
३ फुट = १ गज	२० कट्ठा लम्बी और २० कट्ठा चौड़ी जमीन का एक बीघा होता है।
१६ गिरह = १ गज	
३ गज = १ गट्ठा	
२२० गज = १ फर्लांग	१७६० गज = १ मील
८ फर्लांग = १ मील	२ मील = १ कोस

जमा-खर्च

प्रत्येक लड़की को अपने जमा-खर्च का हिसाब रखना चाहिये। जमा-खर्च रखने से लाभ होते हैं। जमा-खर्च रखनेवाली लड़की कभी फजूल खर्च नहीं करती; हमेशा उतना ही खर्च करके सुखी रहती है, जितना उसे घरवालों से मिलता है। जो लड़की जमा-खर्च नहीं रखती, वह कभी तो अधिक खर्च कर डालती है और कभी एक पैसे के लिए मुहताज हो जाती है। कभी-कभी जमा-खर्च न रखनेवाली लड़कियां पर घरवाले भी सन्देह कर बैठते है।

एक लड़की स्कूल में पढ़ती थी। उसके माँ-बाप बड़े खुशहाल थे। उस लड़की को जलपान करने, कागज-स्याही खरीदने आदि के लिये कुछ रुपया माहवारी दिया करते थे। लड़की बड़ी भोली-भाली और ...धी थी। उसमें कोई भी दुर्गुण नहीं था। किन्तु वह जमा-खर्च नहीं ...ती थी। एक दिन उसकी माँ ने उससे खर्च का ब्योरा पूछा। लड़की ... बतला सकी, भूल गयी थी। परिणाम यह हुआ कि उसके माँ-बाप ... समझ बैठे कि लड़की फजूल खर्च करती है और इसकी आदत ...ड़ती जा रही है। माँ-बाप का यह भाव देखकर लड़की बहुत उदास ... और उसी दिन से वह जमा-खर्च का ब्योरा लिखने लगी। फिर तो ... हर महीने के अन्त में जमा-खर्च का ब्योरा अपने माँ-बाप को ...दिया करती थी। कुछ ही दिनों में माँ-बाप की बुरी धारणा ... हो गयी और वह लड़की अपने माँ-बाप को पहले से अधिक प्रिय ...गयी।

...ऊपर बायीं ओर जो रुपये और पैसे जिससे मिले, वे जमा हैं। ...सबके नीचे १२) का जोड़ है। यानी कुल बारह रुपया मिला। ...दाहिनी ओर ब्योरेवार खर्च लिखा हुआ है, और नीचे सब खर्च ...जोड़ ९॥=) लिखा है। इस प्रकार बारह रुपये जमा हैं और नौ ...दस आने खर्च हैं। जमा में से खर्च की रकम घटाने पर २।=) ...खर्च के जोड़ के नीचे लिखा हुआ है। इस तरह घटाने के बाद ...शेष रहे, उतना ही दाम पास में शेष रहना चाहिये। यदि कमी-... हो तो हिसाब में फर्क समझना चाहिये।

भोजन बनाते समय की सफाई

...कन्याओं को भोजन बनाते समय बहुत साफ वस्त्र पहनना चाहिए ...अपने को भी सफाई और स्वच्छता से रखना चाहिए। इससे ...रिक और मानसिक सब तरह की उन्नति होती है। भोजन बनाते ...मन को शुद्ध और प्रसन्न रक्खो। ऐसी शीघ्रता न करो, जिससे ...न का स्वाद ही नष्ट हो जाय। जो चीज बनाओ, वह असावधानी ...चा-पक्का न रह जाय। हर तरह की चीज स्वादिष्ट बनाने की ...र करो, जिससे घर के प्राणी प्रसन्न हों। यदि तुम्हारे यहाँ कोई ...ी स्त्री या पुरुष अतिथि के रूप में आवे तो उसके लिये रोज की ...नहीं, बल्कि खूब जी लगाकर और बहुत स्वादिष्ट भोजन बनाने ...ष्टा करनी चाहिये। ऐसा भी न हो कि भोजन बनाने में सारा ...ही खतम हो जाय। जहाँ तक हो सके भोजन शीघ्र-से-शीघ्र तैयार ...खिला देना चाहिए। देर करने से भूख कम हो जाती है। भोजन ...समय नाक, कान, दाँत, हाथ या गन्दी चीजों में हाथ लगाना ...नहीं है, इससे गन्दगी और भोजन में अरुचि पैदा हो जाती ...र एक ऋतु के अनुसार भोजन बनाना तथा परोसते समय धीरे-...सब चीजों को बर्तनों में निकालना चाहिये ताकि हाथ जलने का

भय न रहे। इस बात को भलीभाँति समझ लेना चाहिये कि किसकी खूराक कितनी है, उसी तरह से उतना ही ठीक अन्दाज से परोसना चाहिये जिससे सामान खराब भी न हो, बल्कि कुछ भूखे रह जाना अच्छा है। इससे स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है और आलस्य पास नहीं फटकने पाता। इसके मानी यह नहीं समझना चाहिये कि किफायत-सारी के लिये यह कहा जाता है, बल्कि इससे तन्दुरुस्ती बढ़ती है और भोजन पचकर फिर भूख मालूम पड़ती है। चलने-फिरने में कोई तकलीफ नहीं होती। कम भोजन करने में यदि उसी समय दौड़ना भी पड़े तो बहुत आसानी से दौड़ सकती हो।

भोजन बनाने की जगह

रसोई बनाने का स्थान बहुत साफ रहना चाहिये। चारों तरफ से अँधेरा भी न हो। धुँआ निकलने के लिए दरवाजा या खिड़कियों का होना जरूरी है। कीड़े-मकोड़े और जाले को रोज साफ रखना चाहिए। मिट्टी के चूल्हे के अलावा यदि कोयले से भोजन बनाना हो तो लोहे के चूल्हे (दमकला) पर पत्थर या लकड़ी के कोयले से भोजन बनाया जा सकता है। अथवा छोटे कनेस्टर में या छोटी-सी बाल्टी में छड़ लगाकर मिट्टी से चूल्हा बना लो। बाद में छोटी-छोटी लकड़ी तोड़कर उस चूल्हे में रख जरा-सा मिट्टी का तेल छोड़कर सलाई लगा दो और अगल-बगल से पत्थर का कोयला रख दो। थोड़ी देर में आग तैयार हो जायगी। इससे बचत तो बहुत होती है बनिस्बत लकड़ी के कोयले से, लेकिन इसका भोजन कुछ गरम और हानिकारक होता है। इसी प्रकार स्टोव का भी।

नोट—प्यारी बहिनो, तुम्हें भोजन बनाने का तरीका यहाँ इसलिए बतलाया गया कि बहुत तरह के भोजन जो नित्य व्यवहार में आते न्हें घर की सभी स्त्रियाँ जानती हैं। तरह-तरह के भोजन बनने

बम्बई—एक टापू पर बसा है। यहाँ बड़े-बड़े धनी व्यापारी र हैं। जिधर ही देखिये, बड़े-बड़े मकान बहुत सुन्दर बने हुए कई मंजि दिखाई पड़ते हैं। बिजली-ट्राम, नाना प्रकार के आविष्कार, हर त के आराम का सामान, जो चाहिये तुरत मिल जायँगे। यहाँ भी बड़ बड़े-बड़े व्यापारी तथा विदेशी कम्पनियाँ हैं। पहले यहाँ अंग्रेजों की बड़ बड़ी बस्ती थी। यह शहर समुद्र के चारों तरफ धनुषाकार बसा हु है। विलायत, जर्मनी, जापान आदि सब जगह के जहाजों का जमघ देखते ही बनता है। बम्बई शहर देखने से विलायत वगैरह देखने पूर्ति हो जाती है।

कलकत्ता—प्रसिद्ध नगर तथा व्यापार का केन्द्र है। भारतवर्ष सबसे बड़ा नगर तथा ब्रिटिश साम्राज्य में सबसे बड़ा दूसरा नगर यहाँ पर सब सम्प्रदाय के मनुष्य रहते हैं। यह ऐसा स्थान है, जहाँ गरीब से गरीब भी अपना व्यापार करके गुजर बसर कर सकते हैं।

काशी—कोई भी हिन्दू ऐसा न होगा जो काशी का नाम न जानत हो। विश्वनाथपुरी अनादि काल से चली आ रही है। वैसे तो यह पर सहस्रों मन्दिर हैं, परन्तु विश्वनाथजी का स्वर्ण मन्दिर और अन्न पूर्णाजी का मन्दिर विशेष प्रसिद्ध है। चन्द्रग्रहण पर स्नान करने मनुष्य मोक्ष को प्राप्त होता है। यूरोप, अमेरिका आदि देशों से बड़े बड़े अंग्रेज काशीपुरी को देखने आते थे। सारनाथ का मन्दिर भी पास ही में है।

देहली—भारतवर्ष की सबसे प्राचीन तथा आजकल भी राजधानी है। यहाँ जितने सम्राट तथा राजा हुए हैं, उतने अन्यत्र कहीं नहीं भारतवर्ष ही क्यों संसार के किसी नगर को ऐसा सौभाग्य न प्राप्त हुआ होगा। दिल्ली का पहला नाम हस्तिनापुर, बाद का इन्द्रप्रस्थ और अब दिल्ली या देहली है। यहाँ पांडवों का राज्य था। अब स्वतन्त्र भारत भी राजधानी है।

इसी तरह से और भी बड़े बड़े शहर और नगर हैं, जिनका वर्णन स्थानाभाव के कारण नहीं कर सकते ! जैसे—मद्रास, कानपुर, लखनऊ, आगरा, मथुरा, इलाहाबाद, हैदराबाद, लाहौर, अमृतसर, इन्दौर, जयपुर, जोधपुर, अजमेर, उदयपुर, बीकानेर, काश्मीर, शिमला, ढाका, नागपुर, जबलपुर, भागलपुर, पटना, मुजफ्फरपुर, गया, मद्रास, वर्धा, अहमदाबाद, बड़ौदा आदि।

सुभद्रा कुमारी चौहान

संक्षिप्त जीवन चरित्र

(ले०—श्रीकृष्णदेव प्रसाद गौड़)

(प्रिंसिपल डी० ए० वी० कालेज काशी)

भारत की होनहार कुमारी कन्याओं को वीर विदुषी बनने के लिये [illegible] बहिन सुभद्राकुमारी के जीवन चरित्र और उनकी सुप्रसिद्ध कविता "झांसी की रानी" से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये मैं यही इच्छा रखता हूँ जिससे ताकि कन्याओं को अपनी रक्षा [illegible] कविता का पाठ नित्य करने का सुअवसर मिल सके तथा तदनुसार [illegible] बना सकें, यह अभिलाषा हमारी इस भाव पूर्ण [illegible] से है।

—लेखक

संघर्ष ही जीवन है। सुभद्राकुमारी के जीवन का आरम्भ से अन्त तक यही उद्देश्य रहा है। यही उनके जीवन की विशेषता थी, उनके जीवन में यही हमने पढ़ा। वह उन लोगों की [illegible] व्यवहार में लाने की कभी चेष्टा नहीं की, [illegible]

किया। अपने लिए स्वयं अपनी राह बनायी। विरोधों को मधुरता सहन किया। अपनी ओर से कभी कटुता उत्पन्न नहीं होने दिय चौवालीस पैंतालीस साल की अवस्था ऐसी नहीं होती, जब कोई व्य संसार से उठा लिया जाय। विशेषतः वह जो कर्मठ रहा हो, जो जग के रङ्गमञ्च पर सचाई से अपना पार्ट करता रहा हो। किन्तु भगव की लीला विचित्र है, वह तो देवता को गोली का निशाना बना सक है, हृष्टपुष्ट व्यक्ति के शरीरको मोटर से चूर कर सकता है। ई अनेक ढङ्गों से अपनी लीला का प्रदर्शन करता है और उसे करता है।

सुभद्राकुमारी का जन्म प्रयाग में सन् १९०४ में अच्छे क्षत्रि परिवार में हुआ था। अभी थोड़े दिन पहले तक इनका प्रयाग वा घर था। वहीं क्रास्थवेट में इन्होने शिक्षा पायी। कुछ दिनों के पश्च पिता की मृत्यु हो जाने पर यह लोग बाँदा चले गये और अपने भ श्री राजबहादुरसिंह की देखरेख में रहने लगे। १९१९ में इनका विव जबलपुर के वकील श्री लक्ष्मणसिंह के साथ हुआ। यह चार बहनें अ एक भाई थे। दो बहनें इनसे बड़ी है, एक छोटी। भाई इनसे बड़े हैं।

इनके परिवार की चार विशेषताएँ हैं। सरलता, सुन्दरता, साहित्य प्रेम तथा सहृदयता। इन पक्तियों के लेखक का सम्पर्क बहुत घनिष् रूप से इनके परिवार के साथ है और इनके घर के लोगों के सर स्वभाव से बहुत परिचित हैं। पता नहीं यह गुण पिता से मिला अथवा श्री राजबहादुरसिंह से जिन्हें लोग 'रज्जू भैया' कहते हैं, उनसे वह बाँदा में वकील हैं। इतने अच्छे स्वभाव के कम लोग मिलते हैं इन लोगों में शिक्षा का सदा से प्रेम रहा है और विचार सदा उन्नति शील रहे हैं। श्री राजबहादुरसिंह ने अपनी सभी बहनों अपने पु और कन्या को अच्छी शिक्षा दी है। उनकी लड़की भी बी० ए० ए बी० है। विचारों में भी यह परिवार सदा राष्ट्रीय रहा है। श्री

कभी देखा नहीं। पहला सेकसरिया पुरस्कार उन्हें कविता संग्रह प
मिला-दूसरी बार कहानी-संग्रह पर।

राजनीति के क्षेत्र में उन्होंने अपने प्रान्त में जागरूक कार्य किया
अनेक बार जेल गयीं। कभी-कभी पति पत्नी दोनों जेल भेजे गये
कभी-कभी केवल पतिदेव कभी अकेले यही। जो लोग समीप से नहीं
जानते उन्हें पता नहीं कि जब इनके पति जेल में थे और वह बाहर थीं
कितनी कठिनाई उन्हें उठानी पड़ी। लड़की-लड़के की शिक्षा का व्यय
घर का काम-काज। लक्ष्मणसिंह की वकालत ऐसी नहीं थी कि बहुत-सा
धन एकत्र कर लिया हो। इन्होंने वीरता से इसका सामना किया।
इनके भाई राजबहादुरसिंह इनकी सहायता कुछ न कुछ करते थे। किन्तु
इन्होंने भी स्वयं, पुस्तकों से कविसम्मेलनों से वह कठिन समय काटा।
इन्होंने अपनी अवस्था छिपायी नहीं। झूठा आवरण नहीं पहना। व्यय
कम कर दिया, तीसरे दर्जे में चलने लगीं किन्तु कभी दूसरों की सहा-
यता की अपेक्षा नहीं की।

दो-दो बार वह प्रान्तीय असेम्बली की सदस्या रहीं। आगे वह
मन्त्रिणी भी हो जातीं ; ऐसा सम्भव था। मध्यप्रान्त में इनका बड़ा
नाम था। सामाजिक विचारों से भी वह क्रान्तिकारिणी थीं। यों तो
इस लेखक का तथा उनके घरवालों के सभी सदस्यों से घनिष्ट सम्बन्ध
है और हम लोगों में भोजन का भी बराव नहीं है। वह भी सदा मेरे
यहाँ दाल-भात खाती रहीं। इतना ही नहीं सदा बड़ी आत्मीयता का
व्यवहार उनका रहा। जब उन्होंने अपनी बड़ी कन्या का प्रसिद्ध
उपन्यास लेखक मुंशी प्रेमचन्द के पुत्र के साथ विवाह निश्चित किया,
दो घण्टे तक मुझसे पटना में इसी विषय पर विवाद किया। उन्होंने
कहा—हमारा समाज जो कहे—मैं तो पथ बना रही हूँ और पहले पहल
राह बनानेवाले को कठिनाइयां तथा विरोध का सामना करना ही पड़ता।

उनमें बड़ा साहस था और निर्भीकता थी। कोठरी में बैठकर

वित कला की उपासना नहीं की – उन्होंने कर्मक्षेत्र में उतर देश और समाज की सेवा की।

अपने बच्चों से उन्हें बड़ा प्रेम था। मातृत्व की भावना से उनका हृदय ओत-प्रोत था। सब कार्योंमें व्यस्त रहने हुए भी परिवार की देख भाल, बच्चों की शिक्षा, उनका लालन-पालन बड़े स्नेह से उन्होंने किया। मधुर भावना लिये कम स्त्रियाँ होती हैं। इधर कुछ दिनों से रक्तचाप रोग उन्हें हो गया था। यह किसी को नहीं ज्ञात था कि उनका अन्त इस प्रकार से होगा। भगवान ऐसी वीर रमणियों को इस देश में अधिक अधिक जन्म दें!

झाँसी की रानी

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सब ने पहचानी थी,
दूर फिरङ्गी को करने की सब ने मनमें ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥ ॥

कानपूर के नाना की मुँहबोला बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह सन्तान अकेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी वह, नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपान, कटारी उसकी यही सहेली थी,
वीर शिवाजी की गाथाएँ उसको याद जबानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥ २॥

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये उसके प्रिय थे खिलवार,

महाराष्ट्र-कुल-देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।।३।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
व्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाई झाँसी में,
सुभट बुन्देलों की विरुदावलि-सी वह आई झाँसी में,

चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव से मिली भवानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।।४।।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छाई,
किन्तु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
वीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई हाय! विधि को भी नहीं दया आई,

निःसन्तान मरे राजा जी रानी शोक-समानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।।५।।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मनमें हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झण्डा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया,

अश्रुपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई विरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥६॥

अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकट फिरंगी की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौज़ी ने पैर पसारे अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वावों को भी उसने पैरों ठुकराया,

रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥७॥

छिनी राजधानी देहली की, लिया लखनऊ बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठूर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदैपूर, तञ्जोर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात,
जबकि सिन्ध, पञ्जाब, ब्रह्म, पर अभी हुआ था वज्रनिपात,

बंगाले, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥८॥

रानी रोईं रनिवासों में बेगम गम से थीं बेज़ार,
उनके गहने-कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाज़ार,
सरे-आम नीलाम छापते थे अंग्रेज़ों के अखबार,
'नागपूर के जेवर लेलो', 'लखनऊ के लो नौलख हार',

यों परदे की इज्जत परदेशी के हाथ बिकानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥९॥

कुटियोंमें थी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था, अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुन्धूपन्त पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रणचण्डी का कर दिया प्रकट आह्वान,

हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥१०॥

महलों ने दी आग, झोपड़ों ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतन्त्रता की चिनगारी, अन्तरतम में आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनउ लपटें छाई थीं,
मेरठ, कानपूर, पटना ने, भारी धूम मचाई थी,

जबलपूर, कोल्हापूर में भी कुछ हलचल उकसानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥११॥

इस स्वतन्त्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आये काम,
नाना धुन्धूपन्त, तांतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम,

लेकिन आज जुर्म कहलाती उनकी जो कुरबानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥१२॥

इनकी गाथा छोड़ चलें हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मैदानों में,
लेफ्टिनेण्ट वौकर आ पहुंचा, आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वन्द्व असमानों में,

रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई बन स्वतन्त्रता नारी थी,

दिखागयी पथ, सिखागई हमको जो सीख सिखानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥१७॥

जाओ रानी, याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारत वासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतन्त्रता अविनाशी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी,

तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥१८॥

सुभद्राकुमारी चौहान

(दोनों के लिये)

१—चैत्र संवत्सर प्रतिपदा, नवरात्र, रामनवमी, हनुमान जय पूर्णिमा।

२—वैशाख—अक्षय तृतीया, परशुराम जयन्ती, नृसिंह चतुर्द वैशाखी पूर्णिमा।

३—ज्येष्ठ—गंगादशहरा, निर्जला एकादशी, पूर्णिमा।

४—आषाढ़—रथयात्रा, हरिशयनी एकादशी, व्यास या पूर्णिमा।

५—श्रावण—नागपञ्चमी, श्रावणी।

६—भाद्रपद—श्रीकृष्ण जन्माष्टमी—गणेश चतुर्थी, ऋषिपञ्च वामन-जयन्ती, अनन्त चतुर्दशी।

७—आश्विन—महालया (पितृपक्ष) नवरात्र-दुर्गापूजा, विजय दशमी।

८—कार्तिक—धनतेरस, नरक चतुर्दशी, दीपावली, अन्नकूट अक्षय नवमी, प्रबोधिनी एकादशी, वैकुण्ठ चतुर्दशी, कार्तिकी पूर्णिमा

९—मार्गशीर्ष—कालभैरवाष्टमी, दत्तात्रेय जयन्ती।

१०—माघ—मकर-संक्रान्ति, मौनी अमावस्या, वसन्त-पञ्चमी भीष्माष्टमी, माघी पूर्णिमा।

११—फाल्गुन—महाशिवरात्रि, होली आदि।

(स्त्रियों के व्रतोत्सव)

१—गणगौरी, २—वटसावित्री, ३—कजली तीज, ४—बहुल व्रत, ५—हरितालिका, ६—जीवित पुत्रिका, ७—मातृनवमी, ८—करवाचौथ, ९—अहोई, १०—भ्रातृ द्वितीया, ११—सूर्यषष्ठी, १२—अचला सप्तमी, १३—जानकी जयन्ती आदि।

नमें कई व्रत तो ऐसे हैं, जिन्हें स्त्रियाँ बाल्यावस्था से वृद्धावस्था नहीं, वरन् शरीर में प्राण रहते नहीं छोड़ सकतीं। कजली,

इन धामों और पुरियों मे भ्रमण करने से संगम या पवित्र नदि के स्नान, साधु महात्माओं के सत्सङ्ग, लोक-परलोक सुधार के चिन्त आदि का लाभ मिलता है। प्रत्येक गृहस्थ स्त्री-पुरुष को चाहिये कि शरीर में शक्ति रहते तीर्थयात्रा का आनन्द उठावें।

(कुम्भ-ग्रहण-पर्व)

हरद्वार, प्रयाग, काशी आदि स्थानों पर छठें वर्ष अर्धकुम्भी औ बारहवें वर्ष में कुम्भ का महान पर्व पड़ता है। इन अवसरों पर ज इच्छा हो सुविधानुसार जाकर स्नान, दान और दर्शन व पूजन कि जा सकता है। सूर्य या चन्द्रग्रहण पड़ने पर तीसरे वर्ष मलमास आ पर और किसी पुण्य तिथि पर भी विशेष-विशेष तीर्थों में जाने व उपक्रम होता है। इन अवसरों पर तीर्थयात्रा और स्नान का श गुणित फल माना गया है। हमारे पुराणों व धर्म शास्त्रों में तीर्थयात्र के विधिविधान आये हैं।

(यात्रा में मुहूर्त-विचार)

किसी भी दिशा में जाते समय नीचे लिखी बातों का अवश्य विचार कर लेना चाहिये।

दिशाशूल—शनिवार-सोमवार को पूर्व में, रविवार-शुक्रवार के पश्चिम में, मङ्गल-बुध को उत्तर में और गुरुवार को दक्षिण दिशा में दिक्शूल होने से उस दिशा की ओर प्रयाण करने में कष्ट होता है—अत बचाकर जाना चाहिये। ऐसा ठेठ पद्य में भी यों कहा गया है—

मङ्गल बुद्ध उत्तर दिशि काल् । सोम शनीचर पुरुब न चाल्॥
रवी शुक्र जो पश्चिम जावे। हानि होय पथ सुख नहिं पाय॥
बिहफै दच्छिन करै पयाना। फिर नहिं ताको वापस आना॥

चन्द्रमा का विचार—सम्मुख धन देनेवाला, दाहिने सुख-सम्पद ... ला, पीछे मरण जैसा कष्ट देनेवाला और बायें चन्द्रमा धन क करनेवाला होता है। यात्रा में सम्मुख और दक्षिण चन्द्र अच्छे

हिन्दुस्तान और कुछ पाकिस्तान में बँट गये। पहले १० करोड़ के लग भग थे। कुरान इनका प्रधान ग्रन्थ है। रोजा रखते व नमाज पढ़ते हैं मस्जिद इनका देवस्थान है। लखनऊ, कानपुर, दिल्ली, अजमेर, आग बिहार में इनके बड़े-बड़े मकबरे हैं। उर्दू बोलते व लिखते हैं।

ईसाई—ईसा मसीह को अपना धर्म प्रवर्तक मानते हैं। 'बाइबिल इनका प्रधान धर्म ग्रन्थहै। २००० वर्ष की पुरानी सभ्यता है। इस म के संसार में बहुत लोग हैं। अंग्रेजों के भारत आने व शासनकाल इनकी संख्या भारत में १ लाख होगई। कुछ तो यहीं हिन्दुओं से मिल कर बढ़ गये। दक्षिण में अधिक ईसाई है। यत्रतत्र गिरजाघर ब हुए हैं। भारतीय ईसाई भी भारतीय-प्रेम से, ओतप्रोत हैं। अंग्रे बोलते हैं, पर अब तो ये हिन्दीभाषा तथा देवनागरी लिपि का व्यवहा करने लगे हैं।

(कुरीति-निवारण)

मैं तुम लोगों को भारत में हिन्दू-नारी के लिये, जीवन व्यतीत कर में जिन-जिन विशेष बातों की आवश्यकता होती है—बतला चुकी अब मैं कुरीति-निवारण की चर्चा करना चाहती हूँ। इन कुरीतियों हमारे देश, धर्म, समाज, सदाचार और कुल का नाश होता जा रह है। इन्हें तो बिलकुल त्याग देना चाहिये।

मद्य-मांस—आजकल इनकी अधिकता होती जा रही है। बड़े-बड़े लोग मद्य-मांस को छिपकर व्यवहार में ला रहे हैं। इनका पीना-खाना तो दूर रहा, छूना भी महापाप माना गया है। ये मनुष्य के मन-मस्तिष्क व समस्त शरीर को अपवित्र और घृणित कर देते हैं। इनसे चोरी, हत्या, झुठाई, बेइमानी, बदमाशी, विषय-वासना आदि को भारी उत्तेजना मिलती हैं। अतः इन नरक ले जाने वाले पदार्थों को स्त्रियों को न अपनाना चाहिये। बीड़ी, सिगरेट, तमाखू से भी हानि होती है। धिक पान सुर्ती खाना भी दुगुण है।

सिनेमा-मेला-तमाशा—आजकल एक एक शहर में कई कई सिनेमा चल रहे हैं। उनमें प्रायः भद्दे दृश्य और अश्लील गाने, दिखाये सुनाये जाते हैं। इनके कारण भले घर की बहू बेटियों के आचार-विचार पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए भूलकर भी इनके माया-जाल में फँसना न चाहिए। सरकार को भी चाहिए कि चरित्रनाशक फिल्मों को रोककर जनता का हित करे। कितने ही मेले तमाशे भी ऐसे होते हैं जिनमें गुण्डे-बदमाशों की खूब मनोकामनायें सिद्ध होती हैं। धक्के देना, मजाक करना, बोली बोलना, गहने खींचना, औरतों को बहकाना-फुसलाना और झमेला खड़ा करना तो उनका काम ही है। इसलिए अपनी इज्जत-आबरू बचाने वाली बहू बेटियों को ऐसे मेले-तमाशों में न जाने में ही कल्याण है।

सिनेमा-मेले तमाशों से बढ़कर रामायण-गीता तथा पुराणों की कथाओं के पढ़ने-सुनने में विशेष आनन्द मिलता है। अधिक क्या लिखूँ। शुभम्।

तुम्हारी माँ—
पार्वती देवी
C/O लल्लूसिंह श्यामसिंह
गऊघाट, मथुरा
१५। ६। ५२

बड़ी बहन!

प्रणाम! मैं राजीखुशी काशी से चल कर मथुरा सकुशल पहुँच गई। स्त्रियों के डब्बे में स्थान न मिलने के कारण पुरुषों के डब्बे में बैठ गई। भीड़ इतनी थी कि दुष्टों ने दुष्टता करना प्रारम्भ कर दिया, जिससे डब्बे में भारी लड़ाई होने लगी। मेरे पतिदेव को भी मेरे सतीत्व की रक्षा करने में कुछ चोटें लगीं। यहाँ तक कि गाड़ी का सिगनल खींचने की नौबत आई और उन दुष्ट गुण्डों को, रेलवे पुलिस के हवाले करना पड़ा।

हिन्दुस्तान और कुछ पाकिस्तान में बँट गये। पहले १० करोड़ के लग भग थे। कुरान इनका प्रधान ग्रन्थ है। रोजा रखते व नमाज पढ़ते हैं। मस्जिद इनका देवस्थान है। लखनऊ, कानपुर, दिल्ली, अजमेर, आगरे, बिहार में इनके बड़े-बड़े मकबरे हैं। उर्दू बोलते व लिखते हैं।

ईसाई—ईसा मसीह को अपना धर्म प्रवर्तक मानते हैं। 'बाइबिल' इनका प्रधान धर्म ग्रन्थ है। २००० वर्ष की पुरानी सभ्यता है। इस मत के संसार में बहुत लोग हैं। अंग्रेजों के भारत आने व शासनकाल में इनकी संख्या भारत में १ लाख होगई। कुछ तो यहीं हिन्दुओं से मिल-कर बढ़ गये। दक्षिण में अधिक ईसाई है। यत्रतत्र गिरजाघर बने हुए हैं। भारतीय ईसाई भी भारतीय-प्रेम से, ओतप्रोत हैं। अंग्रेजी बोलते हैं, पर अब तो ये हिन्दीभाषा तथा देवनागरी लिपि का व्यवहार करने लगे हैं।

(कुरीति–निवारण)

मैं तुम लोगों को भारत में हिन्दू-नारी के लिये, जीवन व्यतीत करने में जिन-जिन विशेष बातों की आवश्यकता होती है—बतला चुकी। अब मैं कुरीति-निवारण की चर्चा करना चाहती हूँ। इन कुरीतियों से हमारे देश, धर्म, समाज, सदाचार और कुल का नाश होता जा रहा है। इन्हें तो बिलकुल त्याग देना चाहिये।

मद्य-मांस—आजकल इनकी अधिकता होती जा रही है। बड़े-बड़े लोग मद्य-मांस को छिपकर व्यवहार में ला रहे हैं। इनका पीना-खाना तो दूर रहा, छूना भी महापाप माना गया है। ये मनुष्य के मन-मस्तिष्क व समस्त शरीर को अपवित्र और घृणित कर देते हैं। इनसे चोरी, हत्या, झुठाई, बेइमानी, बदमाशी, विषय-वासना आदि को उत्तेजना मिलती हैं। अतः इन नरक ले जाने वाले पदार्थों कभी न अपनाना चाहिये। बीड़ी, सिगरेट, तमाखू से भ अधिक पान सुर्ती खाना भी दुगुण है।